bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org
संवत 2080 युगाब्द 5125 कुल पृष्ठ –40 सितम्बर द्वितीय अंक – 04

वर्तमान
कमल ज्योति

नारी शक्ति वन्दन! अभिनन्दन...

₹20

भव्य दिव्य काशी प्रवास

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय

कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक

नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

नागेंद्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वरायस।
नित्याय शुद्धाय दिगंबराय तस्मे "न" काराय नमः शिवायः।।

सम्पादकीय

स्वच्छता ही सेवा

अमृतकाल में देष बदल रहा है। दुनिया में भारत, भारतीय संस्कृति की चर्चा है। जी–20 बैठक में दुनिया के लोगों ने नये भारत का दर्षन किया। बदलते भारत की बदलती मनमोहक तस्वीर सबको पुनः भाती जा रही है। इसमें स्वच्छता अभियान की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वच्छ गली, मुहल्ले, गाँव, नगर हमारी पहचान बनते जा रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का संकल्प निरन्तर लोगों को प्रेरणा दे रहा है ऐसे में मिसाल के तौर पर हरदीप पुरी जी कहते हैं कि स्वच्छ भारत मिशन भी 'अंत्योदय से सर्वोदय' के दर्शन का एक ज्वलंत उदाहरण है। आवास एवं शहरी मामलों और पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी ने कहा कि स्वच्छ भारत मिशन ने हमारे शहरों के हाशिए पर रहने वाले और कमजोर वर्गों को प्राथमिकता दी है और शहरी गरीबों के उत्थान और सशक्तिकरण के लिए प्रयास किया है। अब समय आ गया है कि हम अपने शहरों को साफ–सुथरा रखने के लक्ष्य के प्रति फिर से प्रतिबद्ध हों। स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े के शुभारम्भ के साथ, हम स्वच्छता के लिए खुद को फिर से समर्पित करते हैं।

माननीय प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त, 2014 को लाल किले की प्राचीर से स्वच्छ भारत मिशन की घोषणा की, तो इतने बड़े पैमाने पर परिवर्तन की पहले कभी कल्पना नहीं की गई थी। तब तक स्वच्छता पर खराब प्रदर्शन के बावजूद, भारत ने अगले पांच वर्षों में खुले में शौच से मुक्ति (ओडीएफ) का लक्ष्य हासिल कर लिया। भारत में सभी 4,884 शहरी स्थानीय निकाय (यूएलबी) (100 प्रतिशत) अब खुले में शौच से मुक्त (ओडीएफ) हैं। स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत 73.62 लाख शौचालय (67.1 लाख व्यक्तिगत घरेलू शौचालय और 6.52 लाख सामुदायिक एवं सार्वजनिक शौचालय) बनाकर हमने लाखों शहरी गरीबों को सम्मान और स्वास्थ्य प्रदान किया है। भारत के 95 प्रतिशत वार्डों में 100 प्रतिशत घर–घर से कचरा संग्रहण होता है। 88 प्रतिशत से अधिक वार्डों में कचरे को अलग करने की व्यवस्था है। स्वच्छ भारत मिशन एक सामान्य सरकारी कार्यक्रम के बजाय एक 'जन आंदोलन' बन गया है।

अब स्वच्छ भारत मिशन–शहरी 20 (एसबीएम–यू 2.0) के माध्यम से वर्ष 2026 तक बढ़ा दिया गया है। इसका लक्ष्य हमारे सभी शहरों को 'कचरा मुक्त' बनाना और विरासत में मिले कूड़ा–कचरा स्थलों का समाधान करना है। स्वच्छ भारत मिशन–शहरी 2.0 के फोकस क्षेत्रों में कई पहलू शामिल हैं। इनमें सामग्री पुनर्प्राप्ति सुविधाएं (एमआरएफ), अपशिष्ट–से–ऊर्जा संयंत्र (डब्ल्यूटीई संयंत्र), निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट प्रबंधन, रिफ्यूज व्युत्पन्न ईंधन (आरडीएफ) संयंत्र, वैज्ञानिक तरीके से लैंडफिल साइट और पुराने कचरे का निवारण शामिल हैं। स्वच्छता ही सेवा–2023 स्वेच्छा और श्रमदान की भावना के साथ–साथ सफाई मित्रों के सहयोग से स्थानीय निकायों में संपूर्ण स्वच्छता हासिल करने पर ध्यान केंद्रित करेगा। सभी मंत्रालय और विभाग कार्यालयों, बस अड्डों, रेलवे स्टेशनों, समुद्रतटों, पर्यटन स्थलों, चिड़ियाघरों, राष्ट्रीय उद्यानों एवं अभयारण्यों, ऐतिहासिक स्मारकों, विरासत स्थलों, नदी के किनारों और घाटों जैसे अधिक आवाजाही वाले सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छता अभियान चलाएगा। सफाई गतिविधियों में सभी महत्वपूर्ण स्थानों से कचरा हटाना, पुराने कचरे को साफ करना, कूड़ेदान, सार्वजनिक शौचालय, कचरा स्थल, अपशिष्ट ढोने वाले वाहनों और सामग्री पुनर्प्राप्ति सुविधाओं जैसी सभी स्वच्छता संपत्तियों की मरम्मत, पेंटिंग, सफाई और ब्रांडिंग करना, बाजारों, सार्वजनिक स्थानों और पर्यटन स्थलों पर स्वच्छ भारत मिशन दीवार पेंटिंग, स्वच्छता प्रश्नोत्तरी का आयोजन, वृक्षारोपण अभियान, स्वच्छता शपथ और स्वच्छता दौड़ आदि कार्यक्रम शामिल होंगे।

युवाओं के नेतृत्व में आईएसएल का सीज़न 2 और भी अधिक रोमांचक और मजेदार स्वच्छता लीग होने का वादा करता है। 4,000 से अधिक शहरी टीमें युवाओं के नेतृत्व वाली नागरिक टीमों के माध्यम से 17 सितंबर को कचरे के खिलाफ लड़ाई जीतने के लिए तैयार हैं। इस वर्ष, शहर की टीमें समुद्रतटों, पहाड़ियों और पर्यटन स्थलों को साफ करने के लिए रैली करेंगी। आईएसएल 2.0 इस पखवाड़े में स्वच्छता के लिए बड़े पैमाने पर युवा समूहों को संगठित करेगा। स्वच्छता लीग स्वच्छ भारत मिशन के तहत युवा कार्रवाई के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करेगी। आइये मिलकर नये भारत के निर्माण में अपनी भूमिका को कर्तव्य भाव से निभायें एक भारत, श्रेष्ठ भारत के स्वप्न को साकार करें।

bjpkamaljyoti@gmail.com

"संविधान सदन" के रूप में जाना जाय : मोदी

नए संसद भवन में हम सब मिलकर के नए भविष्य का श्रीगणेश करने जा रहे हैं। आज हम यहां विकसित भारत का संकल्प दोहराना फिर एक बार संकल्पबद्ध होना और उसको परिपूर्ण करने के लिए जी–जान से जुटने के इरादे से नए भवन की तरफ प्रस्थान कर रहे हैं। सम्माननीय सभागृह, ये भवन और उसमें भी ये सेंट्रल हॉल एक प्रकार से हमारी भावनाओं से भरा हुआ है। हमें भावुक भी करता है और हमें हमारे कर्तव्य के लिए प्रेरित भी करता है। आजादी के पूर्व ये खंड एक प्रकार से लाइब्रेरी के रूप में इस्तेमाल होता था। लेकिन बाद में संविधान सभा की बैठक यहां शुरू हुई और उन संविधान सभा के बैठकों के द्वारा गहन चर्चा, विचार करके हमारे संविधान ने यही पर आकार लिया। यही पर 1947 में अंग्रेजी हुकूमत ने सत्ता हस्तांतरण किया, उस प्रक्रिया का भी साक्षी हमारा ये सेंट्रल हॉल है। इसी सेंट्रल हॉल में भारत के तिरंगे को अपनाया गया, हमारे राष्ट्रगान को अपनाया गया। और ऐतिहासिक अवसरों पर आजादी के बाद भी सभी सरकारों के दरमियान अनेक अवसर आए जब दोनों सदनों ने मिलकर के यहां पर भारत के भाग्य को गढ़ने की बात पर विचार किया, सहमति बनाई और निर्णय भी लिए।

1952 के बाद दुनिया के करीब 41 राष्ट्राध्यक्षों ने इस सेंट्रल हॉल में हमारे सभी माननीय सांसदों को संबोधित किया है। हमारे राष्ट्रपति महोदयों के द्वारा 86 बार यहां संबोधन किया गया है। बीते 7 दशकों में जो भी साथी इन जिम्मेदारियों से गुजरे हैं, जिम्मेदारियों को संभाली हैं, अनेक कानूनों, अनेक संशोधन और अनेक सुधारों का हिस्सा रहे हैं। अभी तक लोकसभा और राज्यसभा ने मिलकर करीब–करीब 4 हजार से अधिक कानून पास किए हैं। और कभी जरूरत पड़ी तो Joint Session के माध्यम से भी कानून पारित करने की दिशा में रणनीति बनानी पड़ी और उसके तहत भी दहेज रोकथाम कानून हो, बैंकिग सर्विस कमिशन बिल हो, आतंक से लड़ने के लिए कानून हो, ये संयुक्त सत्र में पास किए गए हैं, इसी गृह में पास किए गए हैं। इसी संसद में मुस्लिम बहन, बेटियों को न्याय की जो प्रतीक्षा थी, शाहबानो केस के कारण गाड़ी कुछ उल्टी पाटी पर चल गई थी, इसी सदन ने हमारी उस गलतियों को ठीक किया और तीन तलाक के विरूद्ध कानून हम सबने मिलकर के पारित किया। संसद ने बीते वर्षों में ट्रांसजेंडर को न्याय देने वाले कानूनों का भी निर्माण किया। इसके माध्यम से हम ट्रांसजेंडर के प्रति सद्भाव और सम्मान के भाव के साथ उनको नौकरी, शिक्षा, स्वास्थ्य बाकी जो सुविधाएं हैं, एक गरिमा के साथ प्राप्त कर सकें, इसकी दिशा में हम आगे बढ़े हैं। हम सभी ने मिलकर हमारे दिव्यांगजनों के लिए भी, उनकी जरूरतों को देखते हुए, उनके aspirations को देखते हुए ऐसे कानूनों को

इसी सेंट्रल हॉल में भारत के तिरंगे को अपनाया गया, हमारे राष्ट्रगान को अपनाया गया। और ऐतिहासिक अवसरों पर आजादी के बाद भी सभी सरकारों के दरमियान अनेक अवसर आए जब दोनों सदनों ने मिलकर के यहां पर भारत के भाग्य को गढ़ने की बात पर विचार किया, सहमति बनाई और निर्णय भी लिए।

निमार्ण किया जो उनके उज्ज्वल भविष्य की गारंटी बन गए। आर्टिकल–370 हटाने से लेकर, वो विषय ऐसा रहा शायद ही कोई दशक ऐसा होगा कि जिसमें चर्चा न हुई हो, चिंता न हुई हो और मांग न हुई हो, आक्रोश भी व्यक्त हुआ, सभागृह में भी हुआ, सभागृह के बाहर भी हुआ, लेकिन हम सबका सौभाग्य है कि हमें इस सदन में आर्टिकल–370 से मुक्ति पाने का, अलगावाद आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लड़ने का एक बड़ा महत्वपूर्ण कदम। और इस महत्वपूर्ण काम में माननीय सांसदों की, संसद की बहुत बड़ी भूमिका है। जम्मू–कश्मीर में इसी सदन में निर्मित हुआ संविधान, हमारे पूर्वजों ने जिसे दिया वो महामूल्य दस्तावेज, जम्मू–कश्मीर में लागू करते हैं तो इस मिट्टी को प्रणाम करने का मन कर रहा है।

आज जम्मू और कश्मीर शांति और विकास के रास्ते पर चलने के लिए प्रतिबद्ध हुआ है और नए उमंग, नए उत्साह, नए संकल्प के साथ जम्मू–कश्मीर के लोग आगे बढ़ने का कोई मौका अब छोड़ना नहीं चाहते हैं। ये दिखाता है कि संसद के सदस्यों ने मिलकर के संसद के भवन में कितने महत्वपूर्ण काम किए हैं। माननीय सांसदगण लालकिले से मैंने कहा था, यही समय है, सही समय है। एक के बाद एक घटनाओं की तरफ हम नजर करेंगे, हर घटना इस बात का गवाह दे रही है कि आज भारत एक नई चेतना के साथ पुर्नजागृत हो चुका है। भारत नई ऊर्जा से भर चुका है और यही चेतना यही ऊर्जा इस देश के कोटि–कोटि जनों के सपनों को संकल्प में परिवर्तित कर सकती है और संकल्प को परिश्रम की पराकष्ठा कर–करके सिद्धी तक पहुंचा सकती है, ये हम देख सकते हैं। और मेरा विश्वास है, देश जिस दिशा में चल पड़ा है इच्छित परिणाम अवश्य प्राप्त होंगे। हम गति जितनी तेज करेंगे, परिणाम उतने जल्दी मिलेंगे।

आज भारत पांचवी अर्थव्यवस्था पर पहुंचा है। लेकिन पहले तीन में पहुंचने के संकल्प के साथ बढ़ रहा है। और मैं जिस स्थान पर बैठा हूं, जो जानकारियां प्राप्त होती हैं उसके आधार पर, विश्व के गणमान्य लोगों से बातचीत करता हूं उसके आधार पर, मैं बड़े विश्वास से कह रहा हूं, हम में से कुछ लोगों को निराशा हो सकती है। लेकिन दुनिया आश्वस्त है, ये भारत टॉप–3 में पहुंच कर रहेगा। भारत का बैंकिंग सेक्टर आज अपनी मजबूती के कारण से फिर एक बार दुनिया में सकारात्मक चर्चा का केंद्र बना हुआ है। भारत का गर्वनेंस का मॉडल, यूपीआई, डिजिटल स्टेक। मैं इस जी–20 में देख रहा था, मैंने बाली में भी देखा। टेक्नॉलोजी की दुनिया को लेकर के भारत का नौजवान जिस प्रकार से आगे बढ़ रहा है, पूरे विश्व के लिए कौतुहल भी है, आकर्षण भी है और स्वीकृति भी है। हम सब उस ऐसे कालखंड में हैं। मैं कहूंगा हम लोग एक भाग्यवान लोग हैं। ऐसी भाग्यवान समय में हमें कुछ दायित्व निभाने का अवसर आया है और हमारा सबसे बड़ा भाग्य है कि आज Indian Aspirations उस ऊंचाई पर है जो शायद पिछले हजार साल में नहीं रहे होंगे। गुलामी की जंजीरों ने उसके Aspirations को दबोच कर रखा था, उसकी भावनाओं को तहस–नहस कर दिया था। आजाद भारत में वो अपने सपने संजों रहा था, चुनौतियों से जूझ रहा था, लेकिन मिलकर के आज जहां पहुंचे हैं अब वहां वो रुकना नहीं चाहता है। वो Aspirational society के साथ नए लक्ष्य गढ़ना चाहता है। जब Aspirational societies सपने संजोते हों, संकल्प लेकर के निकल पड़ी हो, तब पुराने कानूनों से मुक्ति पाकर नए कानूनों का निर्माण करके उज्ज्वल भविष्य के लिए एक मार्ग प्रशस्त करने का दायित्व हम सभी सांसदों का सविशेष होता है। संसद में बनने वाला हर कानून, संसद में होने वाली हर चर्चा, संसद से जाने वाला हर संकेत Indian Aspiration को बढ़ावा देने के लिए ही होना चाहिए, ये हम सब की भावना भी है, कर्तव्य भी है और एक–एक देशवासी की हमसे अपेक्षा भी है। हम जो भी रिफार्म करेंगे उसके मूल में Indian Aspirations सबसे सर्वोच्च पद पर होना चाहिए, प्राथमिकता पर होना चाहिए। लेकिन मैं बहुत सोच समझकर के कहना चाहता हूं, क्या कभी छोटे कैनवास पर कोई बड़ा चित्र बना सकता है क्या? जैसे छोटे कैनवास पर बड़ा चित्र नहीं बन सकता, वैसे हम भी अगर हमारे अपने सोचने के कैनवास को बड़ा नहीं कर सकते तो भव्य भारत का चित्र भी हम नहीं अंकित कर सकते। 75 साल का हमारे पास अनुभव है। हमारे

पूर्वजों ने जो कुछ भी रास्ते बनाए उससे हमने सिखा है। हमारे पास एक बहुत बड़ी विरासत है। इस विरासत के साथ अगर हमारे सपने हमारे संकल्प जुड़ जाए, हमारा सोचने का दायरा बदल जाए, हमारा कैनवास बड़ा हो जाए तो हम भी उस भव्य भारत के चित्र को अंकित कर सकते हैं, उस तस्वीर का खाका खींच सकते हैं, उसमें रंग भरने का काम हम भी कर सकते हैं और आने वाली पीढ़ी को वो भव्यता दिव्य मां भारती की, हम उनको सुपुर्द कर सकते हैं दोस्तों।

अमृतकाल के 25 वर्षों में भारत को अब बड़े कैनवास पर काम करना ही होगा। अब हमारे लिए छोटी–छोटी चीजों में उलझना, वो वक्त चला गया है। हमें आत्मनिर्भर भारत बनाने के लक्ष्य को सबसे पहले परिपूर्ण करना चाहिए। और हमसे शुरूआत होती है, हर नागरिक से शुरूआत होती है, और आज दुनिया में भी एक समय ऐसा था कि लोग मुझे कहते थे। हमारे बड़े–बड़े बुद्धिजीवी और अर्थशास्त्री लिखते थे कि मोदी आत्मनिर्भर की बात करता है तो multilateralism के सामने चुनौती तो बन नहीं जाएगा। ग्लोबल इकॉनामी के जमाने में ठीक तो नहीं होगा, लेकिन पांच साल के भीतर–भीतर देखा, दुनिया भारत के आत्मनिर्भर मॉडल की चर्चा करने लगी है। और कौन हिन्दुस्तानी नहीं चाहेगा कि डिफेंस सेक्टर में आत्मनिर्भर हों, एनर्जी सेक्टर में हम आत्मनिर्भर हों, एडिबल हो ही, क्या इस देश को आत्मनिर्भर नहीं होना चाहिए। कृषि प्रधान देश हम कहते हैं। खाने का तेल क्या अब देश बाहर से लाएगा? बहुत समय की मांग है कि हमें आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को पूरा करना, ये हम सबका दायित्व है, उसमें दल आड़े नहीं आते हैं, सिर्फ दिल चाहिए, देश के लिए चाहिए।

हमें अब manufacturing sector में दुनिया में सर्वश्रेष्ठ बनने की दिशा में ही कदम रखने होंगे। और मैंने एक बार लालकिले से कहा था zero defect, zero effect, हमारे प्रोडक्ट में कोई डिफेक्ट न हो, हमारी प्रक्रिया में पर्यावरण में कोई इफैक्ट न हो, ऐसा zero defect, zero effect वाला हमें दुनिया के सामने manufacturing क्षेत्र में जाना होगा। हमारे डिजाइनर, हमारे यहां निर्माण हो रही डिजाइंस, हमारे सॉफ्टवेयर, हमारे एग्रीकल्चर प्रोडक्टस, हमारे हस्तशिल्प, हर क्षेत्र में अब हमें वैश्विक मापदंडों को पार करने के इरादे से ही चलना चाहिए तब जाकर के विश्व के अंदर हम अपना झंडा फहरा सकते हैं। मेरे गांव में मेरा सबसे अच्छा मान हो इतनी बात नहीं चलेगी, मेरे राज्य में मेरा सबसे अच्छा प्रोडक्ट नहीं चलेगा, मेरे देश में मेरा सबसे अच्छा प्रोडक्ट नहीं चलेगा, दुनिया में मेरा प्रोडक्ट सबसे अच्छा होगा, ये भाव हमें पैदा करना होगा। हमारी यूनिवर्सिटिज दुनिया के अंदर टॉप रैंकिंग में आए, अब इसमें हमें पीछे नहीं रहना है। हमारे शिक्षा जगत को नई National Education Policy मिली है, एक खुलापन है, सर्व स्वीकृत बनी है। उसके सहारे अब हमें चल पड़ना है और दुनिया के इस टॉप यूनिवर्सिटिज में, अभी जब जी–20 में जब विश्व के मेहमान आए तो मैंने नालंदा की एक तस्वीर रखी थी वहां और जब मैं दुनिया को कहता था 1500 साल पहले मेरे देश में दुनिया की उत्तम से उत्तम यूनिवर्सिटी हुआ करती थी, तो वो सुनते ही रह जाते थे। लेकिन हमें उससे प्रेरणा लेनी है पर प्राप्त तो अभी करके रहना है, ये हमारा संकल्प है।

देश के बेटे–बेटियां आज खेलकूद के जगत में हमारा नाम रोशन कर रहे हैं। लेकिन देश चाहता है और देश का संकल्प होना चाहिए कि अब खेलकूद के हर पोडियम पर हमारा तिरंगा भी लहराएगा।

आज हमारे देश का नौजवान खेल जगत के अंदर दुनिया में हमारी पहचान बना रहा है। Tier-2, Tier-3 city से, गांव गरीब परिवारों से, गांव से देश के नौजवान, देश के बेटे–बेटियां आज खेलकूद के जगत में हमारा नाम रोशन कर

रहे हैं। लेकिन देश चाहता है और देश का संकल्प होना चाहिए कि अब खेलकूद के हर पोडियम पर हमारा तिरंगा भी लहराएगा। हमें अब हमारे पूरे दिमाग को क्वालिटी पर फ़ोकस करना ही होगा, ताकि हम विश्व की आशा अपेक्षाओं के अनुकूल और भारत के सामान्य मानवीय के जीवन में भी quality of life के प्रति जो aspiration बढ़ा है, उसको हम एड्रेस कर पाएं। और जैसे मैंने कहा कि हम भाग्यवान हैं कि हम उस समय काम कर रहे हैं जब समाज अपने आप में एक aspirational society है। हमारा और भी एक भाग्य है कि हम उस समय में हैं जब हिन्दुस्तान युवा देश है। हम दुनिया में सबसे ज्यादा जन आबादी वाला तो देश बने ही हैं लेकिन सबसे बड़ी आबादी उसमें भी सबसे बड़े युवा ये पहली बार हुआ है। जिस देश के पास ये युवा शक्ति हो, युवा सामर्थ्य हो तब हमें उसके टैलेंट पर भरोसा है, हमें उसकी संकल्पशक्ति पर भरोसा है, उसकी साहस में हमें भरोसा है और इसलिए हम चाहते हैं कि दुनिया में भारत का युवा अग्रिम पंक्ति में नजर आना चाहिए, वो स्थिति पैदा होनी चाहिए। आज पूरी दुनिया को स्किल मैनपॉवर की बहुत बड़ी जरूरत है और भारत विश्व की इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए अपने आप को सज्ज कर सकता है और उन आवश्यकताओं की पूर्ति करके दुनिया में अपनी एक जगह भी बना सकता है। और इसलिए विश्व में उनकी आवश्यकता के लिए किस प्रकार के मैनपॉवर की जरूरत है, किस प्रकार के उनको human resource की जरूरत है। स्किल मैपिंग का काम भी चल रहा है और उस स्किल मैपिंग के अनुसार भारत के अंदर skill development की तरफ हम बल दे रहे हैं और जितना ज्यादा हम skill development पर बल देंगे, भारत के नौजवानों का सामर्थ्य विश्व में अपना डंका बजाने में कोई कमी नहीं रखेगा। और हिन्दुस्तानी जहां गया है, जहां गया है, उसने अच्छाई की छाप छोड़ी है, कुछ कर गुजरने की छाप छोड़ी है। ये सामर्थ्य हमारे अंदर पहले से पड़ा हुआ है, और हमारे पहले जो लोग गए हुए हैं उन्होंने इससे यही छवि भी बनाकर रखी हुई है। आपने देखा होगा पिछले दिनों करीब 150 nursing college एक साथ खोलने का निर्णय किया। पूरी दुनिया में बहुत बड़ी requirement है nursing की। हमारी बहन, हमारी बेटियां, हमारे बेटें उस क्षेत्र में दुनिया में पहुंच सकते हैं, आसानी से पहुंच सकते हैं, पूरे विश्व की जरूरत है और ये तो मानवता का काम है जिसमें हम पीछे नहीं रहेंगे। आज medical colleges का इतना व्यापक रूप से निर्माण देश की आवश्यकता तो पूरी करनी ही करनी है, दुनिया की आवश्यकताओं में भी योगदान दे सकते हैं। कहने का तात्पर्य यही है हर छोटी चीज पर बारीकी से ध्यान देते हुए, उस पर अपना ध्यान केंद्रित करते हुए हमें आगे बढ़ना है। हमें भविष्य के लिए सही समय पर सही फैसले भी लेने होते हैं। हम फैसलों को टाल नहीं सकते हैं। हम राजनीतिक लाभ नुकसान के गुणा भाग के भाग के अंदर अपने आपको बंधक नहीं बना सकते हैं। हमें तो देश के aspiration के लिए हिम्मत के साथ नए निर्णय करने होते हैं।

आज सोलर पॉवर के सफल मूवमेंट हमारी भावी पीढ़ी के लिए energy crisis से मुक्ति की गारंटी दे रहा है। आज mission hydrogen आने वाले दिनों में जो environment की चिंता है जो technology में बदलाव आ रहा है उसके समाधान का रास्ता देने का सामर्थ्य रखती है। आज हमारा सेमीकंडक्टर जिस प्रकार से जीवन चलाने में हमारे हृदय की जरूरत रहती है, वैसे ही आज हमारी technology chips के बिना चल नहीं सकती है और semiconductor उसके लिए बहुत अनिवार्य है, उस दिशा में हम आगे जाकर के electronic manufacturing में कोई रुकावट न आए और जीवन कहीं अटक न जाए, उसके लिए एक बहुत बड़ी मात्रा में हम काम कर रहे हैं। जल जीवन मिशन, हर जिले में 75 अमृत सरोवर, हमारी भावी पीढ़ी को, हमारे बच्चों को, उनके भी बच्चे को उनको कभी पानी के बिना तरसना ना पड़े, इसकी चिंता हम आज कर रहे हैं। विश्व के बाजार में हमारा हर व्यापार कारोबार पहुंचे, competitive ताकत के साथ खड़ा रहे। Logistic system को और अधिक कम खर्च वाला बनाना, efficient बनाना, उस दिशा में हम बहुत नीतियां लेकर के चल रहे हैं। आज समय की मांग है कि हम ऐसे भारत का निर्माण करें, जिसमें knowledge innovation हो, ये समय की मांग है। और दुनिया में हमें अग्रिम पंक्ति तक जाने का ये रास्ता भी है। और इसलिए पिछले समय हमने National Education Policy के साथ साथ technology के बढ़ावे के लिए हमने research और innovation का एक कानून भी पारित किया है। ताकि हमारे देश के नौजवानों को इस innovation के और चंद्रयान –3 की सफलता के बाद देश के नौजवानों के मन में विज्ञान की तरफ आकर्षण बढ़ रहा है, हमें मौका गंवाना नहीं है। हमारी युवा पीढ़ी को हमें research और innovation के लिए पूरे अवसर देने हैं। और इस ecosystem को बनाने के लिए हमने एक उज्ज्वल भविष्य के निर्माण की नींव रखी है।

सामाजिक न्याय, ये हमारी पहली शर्त है। बिना सामाजिक न्याय, बिना संतुलन, बिना समभाव, बिना समत्व हम इच्छित परिणामों को घर के भीतर प्राप्त नहीं कर सकते हैं। लेकिन सामाजिक न्याय की चर्चा बहुत सीमित बनकर रह गई है, हमें उसको व्यापक रूप में देखना होगा। हम किसी गरीब को कोई सुविधा दें, किसी समाज में दबे–कुचले व्यक्ति को कोई सुविधा दें, वो तो सामाजिक न्याय की एक प्रक्रिया है, लेकिन उसके

सामाजिक न्याय, ये हमारी पहली शर्त है। बिना सामाजिक न्याय, बिना संतुलन, बिना समभाव, बिना समत्व हम इच्छित परिणामों को घर के भीतर प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

घर तक पक्की सड़क बन जाए ना वो भी सामाजिक न्याय के लिए उसको मजबूती देती है। उसके घर के नजदीक में बच्चों के लिए अगर स्कूल खुल जाएं तो वो भी उसको सामाजिक न्याय की मजबूती देती है। उसको बिना खर्च अगर आरोग्य में, समय के जरूरत पड़ने पर वो मिले, तब जाकर के सामाजिक न्याय की मजबूती मिलती है। और इसलिए जिस प्रकार से समाज व्यवस्था में सामाजिक न्याय की जरूरत है, वैसी ही राष्ट्र व्यवस्था में सामाजिक न्याय की आवश्यकता है। अब देश का कोई हिस्सा पीछे रह जाए, अविकसित रह जाए, ये भी सामाजिक न्याय के खिलाफ है। हमारे देश के उस पूर्वी भाग के इलाके को समृद्ध बनाकर के सामाजिक न्याय की मजबूती भी हमें लेनी है। असंतुलित विकास, शरीर कितना भी स्वस्थ क्यों न हो, लेकिन एक उंगली को भी अगर लकवा मार गया है तो शरीर स्वस्थ नहीं माना जाता है। भारत कितना ही समृद्ध हो, लेकिन कोई अंग भी उसका दुर्बल रह जाए तो भारत समृद्धि में पीछे है मानना पड़ेगा और इसलिए हम सर्वांगीण विकास के पक्ष में सामाजिक न्याय की उस ऊंचाई को प्राप्त करने पक्ष की दिशा में हमें आगे बढ़ना है। चाहे पूर्वी भारत हो, चाहे नॉर्थ ईस्ट हो, हमें उन चीजों को प्राप्त करना है और उसी के लिए जो रणनीति कितनी सफल हुई है, 100 aspirational districts पर विशेष काम किया, नौजवान अफसरों को लगाया गया, strategy बनाई गई, आज दुनिया उस मॉडल की चर्चा कर रही है। और आज 100 districts देश के कोने–कोने में जो पीछे माने जाते थे, उसको बोझ मान लिया गया था, आज स्थिति ये बनी है वो 100 districts अपने–अपने राज्य में लीड़ कर रहे हैं, राज्य की average से भी ऊपर जा रहे हैं। और इस सफलता को देखकर के सामाजिक न्याय की इस भावना को मजबूत करते हुए 100 districts में से आगे बढ़कर के जमीनी स्तर पर ले जाने के लिए 500 ब्लॉक तक उनको aspirational districts ब्लॉक के नाते identify करके उसको मजबूती देने का काम चल रहा है। और मुझे विश्वास है जो ये aspirational blocks हैं, वो एक विकास का नया मॉडल बनने वाले हैं। वो एक प्रकार से देश के विकास की एक नए ऊर्जा केंद्र बनने की संभावना रखते हैं, और उस दिशा में भी हम आगे बढ़ रहे हैं।

माननीय सांसद गण,

आज विश्व की नजर भारत पर है। शीत युद्ध के समय हमारी पहचान गुटनिरपेक्ष देश के रूप में रही है। उस समय की जो जरूरत थी, उसके जो लाभ होने थे, उस समय से हम गुजरे हैं। लेकिन अब भारत का स्था न कुछ और बना है। और इसलिए उस समय गुट निरपेक्ष की आवश्यकता अवश्य रही होगी, आज हम उस नीति को ले करके चल रहे हैं, जिस नीति को अगर हमें पहचानना है तो विश्वमित्र के रूप में हम आगे बढ़ रहे हैं, हम दुनिया से मित्रता कर रहे हैं। दुनिया हमारे में मित्र खोज रही है। ये शायद विश्व में भारत ने और दूरी नहीं, जितनी हो सके उतनी निकटता के जरिए, उस रास्ते पर चल करके हम अपने विश्वमित्र के भाव को आज सफलता पूर्वक आगे बढ़ा रहे हैं और मुझे लगता है कि इसका लाभ आज भारत को हो रहा है। भारत आज दुनिया के लिए एक स्टेरबल सप्लाई चेन के रूप में उभर रहा है और आज विश्व् की ये जरूरत है। और उस आवश्यकता की पूर्ति करने का काम जी–20 में भारत ग्लोबल साउथ की आवाज बनकर उभरा है। ये बीज, जी–20 समिट में जिसे बोया गया है, मेरे देशवासी आने वाले समय में देखेंगे, वो ऐसा वटवृक्ष बनने वाला है, विश्वरस का ऐसा वटवृक्ष बनने वाला है, जिसकी छाया में आने वाली पीढ़ियां सदियों तक एक गर्व के साथ अपना सीना तान करके खड़ी रहेंगी, ये मुझे विश्वांस है।

इस जी–20 में एक बहुत बड़ा काम हमने किया है, बायोफ्यूल एलाएंस का। हम विश्वय का नेतृत्वा कर रहे हैं, दिशा दे रहे हैं। और विश्व को बायोफ्यूल एलासंस में दुनिया के सभी मित्र देश देखते ही देखते उसकी सदस्यिता ले रहे थे, और एक बहुत बड़ा आंदोलन खड़ा होने जा रहा है और जिसका नेतृत्व ये हमारा भारत कर रहा है। छोटे–छोटे महाद्वीप उनके साथ भी आर्थिक कॉरिडोर बनाने की दिशा में हमने बड़ी मजबूती के साथ कदम उठाए हैं। हम यहां से विदाई ले करके नए भवन में जा रहे हैं। संसद के नए भवन में बैठने वाले हैं। और ये शुभ है, गणेश चतुर्थी के दिन बैठ रहे हैं। लेकिन मैं आप दोनों महानुभावों को एक प्रार्थना कर रहा हूं, एक विचार आपके सामने रख रहा हूं। मैं आशा करता हूं कि आप दोनों मिल करके उस विचार पर जहां भी जरूरत पड़े मंथन करके कुछ निर्णय अवश्य करिए। और मेरी प्रार्थना है, मेरा सुझाव है कि अब हम जब नए सदन में जा रहे हैं, तब इसकी गरिमा कभी भी कम नहीं होनी चाहिए। इसे सिर्फ पुरानी पार्लियामेंट कह करके छोड़ दें, ऐसा नहीं होना चाहिए। और इसलिए मेरी प्रार्थना है कि भविष्यर में अगर आप सहमति दें दोनों महानुभाव, तो इसको संविधान सदन के रूप में जाना जाए। ताकि ये हमेशा–हमेशा के लिए हमारी जीवन प्रेरणा बना रहेगा और जब संविधान सदन कहेंगे तब उन महापुरुषों की याद इसके साथ जुड़ जाएगी जो कभी संविधान सभा में यहां बैठा करते थे, गणमान्य महापुरुष बैठा करते थे, और इसलिए भावी पीढ़ी को ये तोहफा भी देने का अवसर हमें जाने नहीं देना चाहिए।

मेरी प्रार्थना है, मेरा सुझाव है कि अब हम जब नए सदन में जा रहे हैं, तब इसकी गरिमा कभी भी कम नहीं होनी चाहिए।

मैं फिर एक बार इस पवित्र भूमि को प्रणाम करता हूं। यहां पर जो तपस्यान हुई है, जनकल्याीण के लिए संकल्पे हुए हैं, उसको परिपूर्ण करने के लिए सात दशक से भी अधिक समय से जो पुरुषार्थ हुआ है, उन सबको प्रणाम करते हुए मैं मेरी वाणी को विराम देता हूं और नए सदन के लिए आप सबको शुभकामनाएं देता हूं।

देश की मातृशक्ति का सशक्तिकरण

नारी शक्ति वंदन अधिनियम के संसद के दोनों सदनों से पारित होने पर भाजपा की निर्वाचित महिला जन प्रतिनिधियों एवं महिला कार्यकर्ताओं द्वारा आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के अभिनंदन कार्यक्रम में देश की करोड़ों महिलाओं और भाजपा कार्यकर्ताओं की ओर से देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी का स्वागत एवं अभिनंदन किया। ज्ञात हो के महिला आरक्षण संबंधी संविधान संशोधन के संसद के दोनों सदनों से पारित होने पर आज सुबह से ही पार्टी के केंद्रीय कार्यालय विस्तार में महिलायें अपने प्रधानमंत्री जी का स्वागत करने के लिए पूरे उत्साह एवं उमंग के साथ एकत्रित थीं। इस कार्यक्रम में केंद्र सरकार में वरिष्ठ महिला मंत्रियों, भाजपा की महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष, महिला सांसदों, विधायकों से लेकर भाजपा की बूथ स्तर की महिला कार्यकर्ता भी उपस्थित थीं।

श्री नड्डा ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का स्वागत करते हुए कहा कि आज पूरे हर्षोल्लास से ओतप्रोत मातृशक्ति जो अपने सम्माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023 के पारित होने पर उन्हें धन्यवाद देने एकत्रित हुई हैं, मैं उनकी ओर से और देश की करोड़ों माताओं–बहनों की ओर से मैं भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री जी का अभिनंदन और स्वागत करता हूँ।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023 का संसद के दोनों सदनों से पारित होना हम सबके लिए ऐतिहासिक घड़ी है। इस ऐतिहासिक घड़ी को लंबे समय तक याद किया जाएगा। हम सब इस महान क्षण के साक्षी बने हैं, यह हम सबका सौभाग्य है। आज की घड़ी, भावनाओं से भरी हुई भावुक कर देने वाली घड़ी है। इसका लंबे समय से इंतजार था। यह आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की दूरदृष्टि, अटूट निश्चय और पक्के इरादे के बल पर संभव हो पाया। मैं व्यक्तिगत रूप से और पार्टी के करोड़ों कार्यकर्ताओं की ओर से इसके लिए आदरणीय प्रधानमंत्री जी का दिल की गहराइयों से हार्दिक अभिनंदन करता हूँ। महिला सशक्तिकरण के उठाये गए क़दमों को रेखांकित करते हुए श्री नड्डा ने कहा कि देश की मातृशक्ति के सशक्तिकरण के लिए प्रधानमंत्री जी ने एक नहीं, अनेकों कदम उठाये चाहे वह उज्ज्वला योजना हो, पीएम आवास योजना हो, स्वच्छ भारत अभियान हो, बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ अभियान हो, स्टार्ट–अप एवं स्टैंड–अप योजनाओं में महिलाओं की भागीदारी हो, स्वयं सहायता समूहों को प्रोत्साहन हो, ट्रिपल तलाक का उन्मूलन हो, पोषण अभियान हो, मातृत्व वंदन अभियान हो या अन्य योजनाएं।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम का संसद के दोनों सदनों से पारित होना हम सबके लिए ऐतिहासिक घड़ी है। हम सब इस महान क्षण के साक्षी बने हैं, यह हम सबका सौभाग्य है। यह आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की दूरदृष्टि, अटूट निश्चय और पक्के इरादे के बल पर संभव हो पाया।

देश में वर्षों से लंबित समस्याओं का प्रजातांत्रिक तरीके से निराकरण किया। उनके अटूट निश्चय, उनकी दूरदृष्टि और इच्छाशक्ति के बल पर धारा 370 धाराशायी ध्वस्त हुआ और जम्मू–कश्मीर में विकास की सुबह हुई। वन रैंक, वन पेंशन भी आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इंप्लीमेंट किया। आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को भी आरक्षण देने का बड़ा काम आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने ही किया। मुस्लिम महिलाओं को ट्रिपल तलाक के अभिशाप से मुक्त करने महती कार्य भी श्री नरेन्द्र मोदी जी ने ही किया जबकि वर्षों तक इस नाम पर विपक्षी दल वोट बैंक की पॉलिटिक्स की।

श्री नड्डा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी शुरू से ही अपने नेतृत्व एवं संगठन में मातृशक्ति को प्रतिनिधित्व देने के लिए कटिबद्ध रही है। भाजपा देश की अकेली और पहली पार्टी है जिसने अपने संगठन में राष्ट्रीय स्तर से लेकर बूथ समिति तक महिलाओं को आरक्षण और प्रतिनिधित्व दिया है।

महिला सशक्तिकरण के लिए कई कार्य किये। स्वच्छ भारत अभियान के तहत देश भर में लगभग 12 करोड़ इज्जत घर बना कर महिलाओं को सम्मान के साथ जीने का अधिकार दिया गया। यूनिसेफ ने इसे 'गेम चेंजर' कहा। वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाईजेशन ने माना कि इससे भारत में हर साल लाखों बच्चों की जान बच रही है। पीएम आवास योजना ग्रामीण में लगभग 69 प्रतिशत आवास का मालिकाना हक़ महिलाओं को मिला है। जल जीवन मिशन से महिलाओं को काफी सहूलियत मिली है। इससे भी लाखों लोगों का जीवन बच रहा है। वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाईजेशन ने कहा कि डायरिया के कारण लाखों बच्चे पहले काल कवलित हो जाते थे लेकिन जल जीवन मिशन से इन बच्चों की जानें बच रही हैं।

श्री नड्डा ने कहा कि गणेश चतुर्थी के पावन अवसर पर पहले लोक सभा और कल देर रात राज्य सभा से महिला आरक्षण के प्रति समर्पित 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023' के पारित होने पर मैं देश की मातृशक्ति का अभिनंदन एवं वंदन करता हूँ। मातृशक्ति के सशक्तिकरण से न केवल देश की तस्वीर और तकदीर बदलेगी बल्कि देश की दृष्टि और दिशा भी बदलेगी। हम मातृशक्ति के सशक्तिकरण के लिए कटिबद्ध हैं। मैं एक बार पुनः देश की करोड़ों माताओं–बहनों की ओर से नारी शक्ति वंदन अधिनियम के पारित होने पर यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का कोटि–कोटि अभिनंदन एवं स्वागत करता हूँ।

यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो

यूपी के विकास में एक मील का पत्थर : मुर्मु

आर्थिक कौशल, सांस्कृतिक समृद्धि और उद्यमशीलता के भव्य प्रदर्शन के साथ यूपी में टरनेशनल ट्रेड शो (UPITS 2023) का आयोजन सतत विकास हुआ। माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के दूरदर्शी नेतृत्व में राज्य भारत का विकास इंजन बनने की अविश्वसनीय यात्रा पर बढ़ रहा है।

यूपीआईटीएस 2023, एक अनूठा शो है और उन विभिन्न क्षेत्रों को उजागर करने के लिए मंच के रूप में कार्य करता है जो सामूहिक रूप से उत्तर प्रदेश की विकास में योगदान करते हैं। उन सभी को वैश्विक मान्यता और सहयोग के लिए एक छत के नीचे लाने का प्रयास है।

कार्यक्रम का उद्घाटन भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने किया। यह महत्वाकांक्षी व्यापार शो, भारत में किसी भी राज्य सरकार द्वारा की गई अपनी तरह की पहली पहल है, जिसने हाल के वर्षों में यूपी द्वारा हासिल किए गए विभिन्न क्षेत्रों में शानदार विकास को प्रदर्शित करने के लिए अपना एक मंच तैयार किया है। आयोजन प्रतिष्ठित इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता, एमएसएमई मंत्री राकेश सचान, पीडब्ल्यूडी मंत्री बृजेश सिंह सहित उत्तर प्रदेश सरकार के प्रमुख कैबिनेट मंत्री, सूर्य प्रताप शाही, व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास राज्य मंत्री कपिल देव अग्रवाल, जल शक्ति राज्य मंत्री दिनेश खटीक, बलिया नगर विधायक दयाशंकर सिंह, गौतम बुद्ध नगर विधायक महेश शर्मा सहित अन्य प्रतिष्ठित गणमान्य लोग भी शामिल हुए।

राष्ट्रपति जी ने 300 महिला उद्यमियों के साथ बात की और उनके स्टॉल का अवलोकन किया। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने अपने समापन भाषण में इस भव्य ट्रेड शो के लिए यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उनकी पूरी टीम की खूब सराहना की। उन्होंने कहा कि यह शो उत्तर प्रदेश के व्यापार और उद्योगों को एक वैश्विक मंच प्रदान करेगा। पिछले 6 वर्षों में यूपी ने देश की जीडीपी में उल्लेखनीय योगदान दिया है। साथ ही कहा कि वर्ष 2016–17 में यूपी की जीडीपी 13 लाख करोड़ थी जो वर्ष 2022–23 में 22 लाख करोड़ बढ़ने का अनुमान है और यह उपलब्धि निस्संदेह अभूतपूर्व है। ऐसे प्रयासों ने देश को दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी

अर्थव्यवस्था बना दिया है और जल्द ही देश दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। यूपी ने राज्य को एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का संकल्प लिया है और उम्मीद है कि यूपी देश को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में और योगदान देगा। राष्ट्रपति जी ने कहा कि 96 लाख एमएसएमई के साथ राज्य में एमएसएमई की संख्या में यूपी चार्ट पर शीर्ष पर है। प्रदेश में निर्यात लगातार बढ़ रहा है और यह वर्ष 2017–18 के 88 हजार करोड़ से बढ़कर 2022–23 में 1.75 लाख करोड़ हो गया है। उन्होंने विश्वास जताया कि यह शो यूपी के विकास में मील का पत्थर साबित होगा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने उद्बोधन में शो में आने के लिए राष्ट्रपति जी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह ट्रेड शो यूपी सरकार द्वारा पिछले छह वर्षों में पीएम मोदी के मार्गदर्शन में व्यापार, व्यवसाय और उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए किये गये प्रयासों का प्रतीक है। यह पहला अंतरराष्ट्रीय व्यापार शो है इसलिए इसे आयोजित करने में हमारे सामने चुनौतियां थीं लेकिन हमने उन्हें पार कर लिया। पीएम मोदी से प्रेरित होकर हम यूपी को बीमारु राज्य से विकसित राज्य बनाने की दिशा में आगे बढ़े और एक विकसित अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर हुए। आर्थिक विकास के मामले में उत्तर प्रदेश का यह परिवर्तन इस ट्रेड शो के रूप में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। हमने पहले ही यूपी के पारंपरिक व्यापार और शिल्प को बढ़ावा देने के लिए ओडीओपी जैसी कई योजनाएं शुरू की थीं, जिन्हें पीएम मोदी ने अब विश्वकर्मा योजना के रूप में शुरू किया है। हमने अपने छोटे व्यापारियों और एमएसएमई को बढ़ावा दिया है जिसके परिणामस्वरूप व्यापार शो के लिए 70,000 से अधिक बी2बी खरीदारों का पंजीकरण हुआ है। ये नये भारत का नया उत्तर प्रदेश है जिसने अपनी क्षमता को पहचाना है। यह न केवल व्यापार के लिए बल्कि सबसे बड़े बाजार बल्कि उपभोक्ता बाजार और श्रम बाजार के रूप में भी उभरा है। इसने अपने स्केल को स्किल में बदलकर अपनी क्षमता दिखायी है। उन्होंने कहा कि उनका मानना है कि यह ट्रेड शो पीएम मोदी की आकांक्षा के अनुरूप राज्य के विकास इंजन के रूप में भारत की अर्थव्यवस्था का प्रतिनिधित्व करेगा।

> **यह ट्रेड शो पीएम मोदी की आकांक्षा के अनुरूप राज्य के विकास इंजन के रूप में भारत की अर्थव्यवस्था का प्रतिनिधित्व करेगा।**

आयोजन में पहुचें एमएसएमई मंत्री श्री. राकेश सचान ने अपने भाषण में कहा कि यह आयोजन अपनी तरह का अनोखा ट्रेड शो है, जिसमें यूपी के कोने–कोने से विभिन्न क्षेत्रों के लोग हिस्सा लेकर अपने उत्पादों का प्रदर्शन कर रहे हैं। पहले व्यापार शो केवल कुछ क्षेत्रों के प्रदर्शन तक ही सीमित थे, लेकिन इस बार व्यापार शो में रक्षा, कृषि, ई–कॉमर्स, उद्योग, शिक्षा, डेयरी, मत्स्य पालन, कपड़ा, हथकरघा, जीआई उत्पाद सहित सभी क्षेत्र भाग ले रहे हैं। राज्य में कारीगरों, छोटे व्यापारियों और व्यवसायों के उत्थान के लिए माननीय मुख्यमंत्री जी के मार्गदर्शन में 2018 में ओडीओपी योजना और 2019 में विश्वकर्मा योजना शुरू करने के बाद पीएम मोदी द्वारा पूरे देश में विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना शुरू की गई है।

पिछड़ा वर्ग आयोग से ओबीसी के अधिकारों की संवैधानिक सुरक्षा : के०लक्ष्मण

पिछड़ा वर्ग मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री डा. के. लक्ष्मण ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा प्राप्त हुआ और ओबीसी वर्ग के अधिकारों को संवैधानिक सुरक्षा प्राप्त हुई। आज देश में विपक्ष का गठबंधन बन रहा है, जिसके पास विकास का ऐजेण्डा नहीं है, सभी को अपने परिवार व लूट का पैसा बचाने की चिन्ता है। विपक्ष के ऐजेण्डे में सिर्फ मोदी जी का विरोध है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश विश्व में सशक्त हुआ है। देश के अन्दर गरीब, किसान, नौजवान, महिलाएं, अनुसूचित सहित सभी वर्गों का आर्थिक व सामाजिक विकास हो रहा है। देश सबका साथ, सबका विकास व सबका विश्वास की नीति पर आगे बढ रहा है जिसमें बिना पक्षपात के प्रत्येक वर्ग को सरकार की योजनाओं का लाभ मिल रहा है। श्री के. लक्ष्मण ने कहा कि सोशल मीडिया के माध्यम से पिछड़ा वर्ग मोर्चा के कार्यकर्ता साइवर योद्धा के रूप में जहां केन्द्र व प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों को जनता तक पहुंचायेगें। वहीं विपक्ष के द्वारा फैलाये जा रहे झूठ व भ्रम का भी मुंहतोड़ जवाब देगें। उन्होंने कहा कि यह कार्यशाला पिछड़ा वर्ग मोर्चा के साइवर योद्धाओं को सोशल मीडिया पर आने वाली हर समस्या के समाधान के लिए समर्थ बनाएगी।

भारतीय जनता पार्टी पिछड़ा वर्ग मोर्चा की आईटी एवं सोशल मीडिया कार्यशाला मुख्यालय में सम्पन्न हुई। उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य, भाजपा प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह पिछड़ा वर्ग मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. के लक्ष्मण, केन्द्रीय मंत्री श्री बीएल वर्मा, मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेन्द्र कश्यप, मोर्चा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संगम लाल गुप्ता, मोर्चा तथा प्रकोष्ठों की राष्ट्रीय सोशल मीडिया समन्वयक श्रीमती प्रीति गांधी, मोर्चे के राष्ट्रीय सोशल मीडिया संयोजक श्री राहुल नागर ने सोशल मीडिया पर भाजपा की प्रभावी उपस्थिति के लिए मार्गदर्शन दिया।

श्री मौर्य ने कहा कि चुनाव में एक युद्ध बूथ पर, तो दूसरा युद्ध सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर होता है। हमें दोनो युद्ध जीतना है। विपक्ष के हर दुष्प्रचार का, हर हमले का संस्कारित भाषा में करारा जबाब देना है। परिवारवादी, जातिवादी, भ्रष्टाचारी विपक्षी दल गरीब, उपेक्षित पिछडे वर्ग के चाय बेचने वाले के बेटे को देश के प्रधानमंत्री पद पर बर्दास्त नहीं कर पा रहे है। 2019 के लोकसभा सभा चुनाव में सभी विपक्षी दलों ने भाजपा को रोकने की कोशिश की, लेकिन प्रदेश की जनता ने

उत्तर प्रदेश में भाजपा को 51 फीसदी वोट देकर सारे गठबंधन धराशायी कर दिया। इस बार भाजपा के योद्धा बूथ पर भी और सोशल मीडिया पर भी विजय का परचम फहरायेगें। उन्होने कहा कि अब 100 में 75 हमारा है बाकी में बंटवारा हैं और बंटवारे में भी हमारा है। इस लक्ष्य के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा प्रदेश की सभी 80 सीटें जीतेगी।

श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सेवा, सुशासन एवं गरीब कल्याण के संकल्प के साथ आत्मनिर्भर भारत का निर्माण हो रहा है। नए संसद भवन में नारी शक्ति वंदन अधिनियम पास होने से महिला सशक्तिकरण का नया युग प्रारम्भ हुआ हुआ। प्रत्येक बूथ पर ओबीसी नेतृत्व को तैयार करना है। आज भाजपा की सास्कृतिक राष्ट्रवाद की विचारधारा ने राहुल गांधी समेत सभी विपक्षी दलों के नेताओं को मंदिरों में झुकने के लिए विवश किया।

प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने संबोधित करते हुए कहा कि वर्तमान युग सतत सजगता के साथ तथ्यात्मक रूप से तैयार रहने का है। सोशल मीडिया प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व की केन्द्र सरकार तथा मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व की प्रदेश भाजपा सरकार की सेवा सुशासन एवं गरीब कल्याण को समर्पित योजनाओं को जनमानस तक पहुंचाने का सशक्त माध्यम बन चुका है। उन्होंने कहा कि भाजपा की विचारधारा में अंत्योदय, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, वैभवशाली राष्ट्रनिर्माण तथा जन–जन के कल्याण से विश्व गुरू के स्थान पर स्थापित होते हुए भारत का दर्शन निहित है। इस विचारधारा को सर्वव्यापी बनाने के लिए सोशल मीडिया के सभी प्लेटफार्म का हमें उपयोग करना चाहिए। सोशल मीडिया वॉलंटियर के नाते हमारी जिम्मेदारी होना चाहिए कि हम तथ्यात्मक रूप से मजबूती के साथ विपक्ष के द्वारा फैलाए गए भम्र, झूठ, पाखंड का शीघ्र जवाब देने में सक्षम हो सकें।

आगामी लोकसभा चुनाव में सोशल मीडिया पर विपक्ष षड़यंत्र रचकर चुनौतियां खड़ी करेगा। विपक्ष के पास ना तो नीति है ना नियत है और ना ही नेतृत्व है। विपक्ष का पूरा जोर अफवाहें फैलाने पर रहेगा। ऐसे में सोशल मीडिया के योद्धाओं की जिम्मेदारी चुनाव में महत्वपूर्ण रहेगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को एक बार फिर प्रधानमंत्री बनाने के लिए हम सभी को अपनी–अपनी जिम्मेदारियों को परिश्रम के साथ निर्वहन करना है।

उन्होंने बताया कि आगामी समय में सोशल मीडिया कार्यशालाएं क्षेत्र, जिला एवं मण्डत स्तर पर भी आयोजित की जाएगी।

भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेन्द्र कश्यप ने कार्यशाला में सोशल मीडिया की कार्ययोजना को प्रस्तुत करते हुए कहा कि बूथ स्तर पर पिछड़ा वर्ग मोर्चा का बूथ स्तर पर राष्ट्रवादी नेतृत्व विकसित करना है। बूथ स्तर पर मोर्चा के वालंटियर जमींन पर भी भाजपा का विजय परचम लहरायेगें और सोशल मीडिया पर भी भाजपा को सर्वव्यापी व सर्वग्राही बनाने का काम करेगें। उन्होंने कहा कि 2024 का लोकसभा चुनाव के लिए हमें आज से ही पूरी तैयारी में जुटना है। उन्होंने कहा कि हमारे पास प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व की केन्द्र सरकार व मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्य नाथ जी के प्रदेश भाजपा सरकार की समस्त योजनाओं तथा पार्टी की विचारधारा की पूर्ण जानकारी होना चाहिए जिससे हम सोशल मीडिया पर भारतीय जनता पार्टी का सशक्त पक्ष रखने का माध्यम बन सकें। उन्होने केन्द्रीय नेत्त्व को विश्वास दिलाया की पिछड़ा वर्ग मोर्चा की प्रदेश इकाई संगठन की केन्द्रीय नेतृत्व की अपेक्षाओं को पूर्ण करेगी और आगामी चुनाव में प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की बड़ी विजय का माध्यम बनेगी।

इसके साथ ही भाजपा मोर्चा व प्रकोष्ठो की सोशल मीडिया राष्ट्रीय समन्वयक श्रीमती प्रीति गांधी ने कार्यशाला को सम्बोधित किया। मोर्चा के प्रदेश महामंत्री श्री रामचन्द्र प्रधान, श्री विनोद यादव तथा श्री संजय भाई पटेल उपस्थित रहे।

सरकार की नीतियां योजनायें को जन–जन तक पहुंचायें: बंसल

भारतीय जनता पार्टी की लोकसभा प्रवास योजना बैठक शुक्रवार को राजधानी लखनऊ में संपन्न हुई। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी की अध्यक्षता तथा राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुनील बंसल व प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह की उपस्थिति में आयोजित बैठक में प्रदेश के मैनपुरी, श्रावस्ती, लालगंज, अम्बेडकरनगर तथा रायबरेली संसदीय क्षेत्रों की लोकसभा प्रवास योजना के तहत समीक्षा तथा आगामी कार्ययोजना पर चर्चा हुई। बैठक में मैनपुरी, श्रावस्ती, लालगंज, अम्बेडकरनगर तथा रायबरेली संसदीय क्षेत्रो के लोकसभा संयोजक, लोकसभा प्रभारी, लोकसभा विस्तारकों सहित लोकसभा प्रवास योजना की प्रदेश टोली के सदस्य सम्मिलित हुए।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुनील बंसल ने बैठक में कहा कि विगत लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को उत्तर प्रदेश में जिन लोकसभा सीटों पर सफलता नहीं मिल सकी, ऐसी सीटों पर विशेष कार्ययोजना तैयार करते हुए काम करना है। उन्होंने कहा कि बूथ स्तर पर विजय की रणनीति बनाकर काम करना है। प्रत्येक विधानसभा में अधिक से अधिक लोगों को प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना से जुड़ने के लिए प्रेरित करना है तथा आयुष्मान कार्ड बनाने में लोगों का सहयोग करना है। बूथ स्तर पर युवा, किसान, महिलाओं तथा लाभार्थियों से सम्पर्क व संवाद स्थापित कर सरकार की योजनाएं तथा नीतियां पहुंचाना है। उन्होंने कहा कि बूथ स्तर पर माइक्रोमैनेजमेंट तथा टीमवर्क हमें लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक होगा। वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के साथ संवाद तथा प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए कार्य तथा कार्यक्रम का निर्धारण हमारी योजना का हिस्सा होना चाहिए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश की सभी 80 सीटें जीतने का लक्ष्य और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम के साथ हम सभी को मिलकर काम करना होगा।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि 2019 के लोकसभा चुनाव में विपक्ष के एक साथ लामबंद होने के बावजूद उत्तर प्रदेश में भाजपा को 50 फीसदी से ज्यादा वोट प्राप्त हुए थे। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पूरे देश का वातावरण भाजपा के अनुकूल है। 2024 के लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी तथा मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी की सरकारों के कार्य, कार्यकर्ताओं का परिश्रम, सबका साथ–सबका विकास–सबका विश्वास की नीति से भाजपा प्रदेश में 80 सीटें जीतने का लक्ष्य पूर्ण करेगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में पार्टी के परिश्रमी कार्यकर्ता अपने परिश्रम से प्रत्येक कार्यक्रम व अभियान को सफल बनाकर फिर एक बार मोदी सरकार के संकल्प को पूर्ण करने में जुटे हुए है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व की केन्द्र सरकार तथा मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व की प्रदेश भाजपा सरकार ने संकल्प पत्र के सभी संकल्पों को पूर्ण किया है। आज देश में यह सोच विकसित हुई है कि भाजपा जो कहती है वह करती है और यही सोच भाजपा को सर्वव्यापी बनाती है।

प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने बैठक में सशक्त बूथ की संरचना को जीत का मंत्र बताते हुए कहा कि हमारी प्रत्येक कार्ययोजना में सम्पर्क, संवाद, समन्वय तथा सक्रियता से प्रत्येक परिणाम भाजपा के अनुकूल होगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन 17 सितम्बर से सेवा पखवाड़ा प्रारम्भ हुआ है। सेवा पखवाड़ा के अन्तर्गत आयुष्मान भव कार्यक्रम के माध्यम से रक्तदान शिविर, निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर तथा आयुष्मान कार्ड बनवाने में सहयोग का काम पार्टी के पदाधिकारी तथा कार्यकर्ता कर रहे है। उन्होंने कहा कि पार्टी का बूथ सशक्तिकरण अभियान, बूथ विजय का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहा है और बूथ की मजबूत इकाई से निश्चित विजय का खाका तैयार हो रहा है। उन्होंने कहा 24 सितम्बर को मन की बात तथा 25 सितम्बर को प. दीनदयाल उपाध्याय जयन्ती का कार्यक्रम बूथ स्तर पर आयोजित होगा। आगामी दिनों में समस्त सामाजिक व राजनैतिक बिन्दुओं पर विधानसभा तथा बूथ स्तर पर तैयार कार्ययोजना पर पार्टी कार्य करेगी।

बैठक में लोकसभा प्रवास योजना के केन्द्रीय सदस्य श्री आशीष सूद, कैबिनेट मंत्री श्री सूर्य प्रताप शाही, प्रदेश उपाध्यक्ष श्री विजय बहादुर पाठक, प्रदेश महामंत्री श्री अमर पाल मौर्य तथा क्षेत्रीय अध्यक्ष श्री कमलेश मिश्रा, श्री मुकुट बिहारी वर्मा उपस्थित रहे।

शुभकामनायें "मोदी जी"

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन 17 सितम्बर से भारतीय जनता पार्टी ने विभिन्न सेवा कार्यो के माध्यम से पूरे प्रदेश में सेवा पखवाड़े की शुरूआत की। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने हनुमान सेतु मंदिर पहुंचकर हनुमान जी महाराज की पूजा, अर्चना करके माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन के लिए प्रार्थना की तथा प्रसाद वितरण किया। प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी एवं प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के साथ जीपीओ परिसर में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जीवन को रेखांकित करती हुई प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि राष्ट्रसेवा और जनहित को जीवन में सर्वोपरि रखने वाले सच्चे कर्मयोगी, निःस्वार्थ भाव से राष्ट्र की सेवा में निरन्तर अपना सर्वस्व समर्पित कर रहे। योगी आदित्यनाथ जी ने इस अवसर पर बधाई शुभकामनायें देते हुए कहा कि विश्व के सबसे लोकप्रिय नेता करोडो भाजपा कार्यकर्ताओं के प्रेरणास्रोत, देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को जन्मदिन की हार्दिक बधाई एवं मंगलकामनाएं।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के यशस्वी नेतृत्व में राष्ट्र पुर्ननिर्माण में भागीदार बनना मेरे लिए परम सौभाग्य की बात है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने प्रारम्भिक जीवन में गरीबी में जीवन बिताया है, इसलिए आज उनके नेतृत्व में सरकार की प्रत्येक योजना गरीब कल्याण को समर्पित है। बचपन से राष्ट्र आराधना में रत मोदी जी ने आर्थिक, सामरिक एवं सांस्कृतिक वैभवशाली राष्ट्र निर्माण का संकल्प लेकर काम कर रहे है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व भारत पुनः सोने की चिड़िया भी बनेगा और विश्वगुरू के स्थान पर बिराजित भी होगा।

प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन पर शुभकामनाएं देते हुए कहा कि नव भारत के अद्वितीय शिल्पकार भारत की पुरातन विरासत को नया रूप देने वाले, वर्तमान के भारत को आत्मनिर्भर बनाने वाले, दृढ़ व्यक्तित्व के धनी, प्रभावशाली साधक, अमृतकाल में युवाओं के लिए अंत्योदय को विकसित भारत के लिए संकल्प सिद्धि का मंत्र बनाने वाले वैश्विक, वास्तविक नेता यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन पर आत्मीय बधाई व शुभकामनाएं। मेरी परम् पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि राष्ट्रहित सर्वोपरि के साधक देश के सर्वप्रिय व सर्वश्रेष्ठ श्री नरेन्द्र मोदी जी सदा स्वस्थ एवं सानंद रहे तथा देशवासियों को अपने अप्रतिम नेतृत्व से लाभान्वित करते रहे।

प्रदेश महामंत्री संजय राय ने बताया कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन पर प्रदेश में शक्तिकेन्द्रो पर मंदिरो में पार्टी के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि तथा कार्यकर्ताओं ने पूजा अर्चना करके माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के स्वस्थ एवं दीर्घायु जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन पर सेवा पखवाडे के तहत जिला स्तर पर आयोजित कार्यक्रमों में केन्द्रीय मंत्री, प्रदेश सरकार के मंत्री, प्रदेश पदाधिकारी, सांसद, विधायक, महापौर सहित सभी जनप्रतिनिधि एवं कार्यकर्ताओं ने सम्मिलित होकर माननीय प्रधानमंत्री जी के वर्चुअल संवाद के साथ जुड़े। रक्षामंत्री श्री राजनाथ सिंह ने लखनऊ, केन्द्रीय मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी ने झांसी, केन्द्रीय मंत्री श्री महेन्द्र नाथ पाण्डेय ने वाराणसी तथा केन्द्रीय मंत्री श्री वीके सिंह ने गोरखपुर में सहभागिता की।

हिन्दू अर्थात् भारतीय

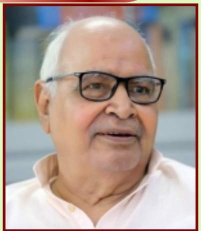

हृदयनारायण दीक्षित

व्यक्ति बिना कर्म किए नहीं रह सकता। प्रत्येक मनुष्य कुछ न कुछ कर्म करता रहता है। मनुष्य की कर्मसाधना को मोटे तौर पर दो भागों में बाँट सकते हैं। पहला है जीवन यापन के लिए जरूरी कर्म। घर गृहस्थी और भोजन वस्त्र की समस्याओं के लिए

सतत् कर्म। सभी प्राणी जीविका के लिए काम करते हैं। ऐसे कर्म के अभाव में जीवन नहीं चलता। लेकिन समूचे समाज के लिए साधनारत रहना ज्यादा महत्वपूर्ण है। दूसरा कर्म विशिष्ट है। परस्पर प्रेम, सद्भाव और उदात्त आदर्शों का निर्माण व पालन महत्वपूर्ण है। यह कार्य मनुष्य साधना का विशिष्ट भाग है। समाज और विश्व को सुन्दर बनाने के लिए किए गए कर्म संस्कृति कहे जाते हैं। संस्कृति श्रेष्ठ मनुष्यों की विभिन्न साधनाओं का सर्वोत्तम परिणाम है। मनुष्य प्रकृति का अंश है। प्रकृति उसे जीवनरस देती है। इस तरह मनुष्य और प्रकृति के बीच एक सुस्थापित अंतर्संगीत है। लेकिन मनुष्य और प्रकृति के मध्य तमाम अंतर्विरोध भी हैं। संस्कृति का काम इन अंतर्विरोधों के मध्य तालमेल बैठाना भी है। प्रेय और श्रेय को साथ रखना है।

भारत के लोगों ने सहस्त्रों वर्ष तक लोकमंगल की साधना की है। ऐसी ही तमाम आदर्श साधनाओं का सर्वोत्तम संस्कृति है। भारत के समाजचेता, दार्शनिक और ज्ञानीजनों का सर्वोत्तम है संस्कृति। हजारों पुष्पों का पराग है, मधु रस है और मोहक गंध है संस्कृति। भारत एक प्राचीन सभ्यता और संस्कृति है। इस देश का इतिहास अतिप्राचीन है। प्राचीनता के तत्व में जाने हुए की तुलना में अनजाना भाग भी कम नहीं है। डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है, ''इस देश का सबसे पुराना उपलब्ध साहित्य आर्यों का है। इन्हीं आर्यों के धर्म विश्वास नाना अनुकूल प्रतिकूल परिस्थितियों में बनते बदलते अब तक इस देश की अधिकाँश जनता के निजी धर्म और विश्वास बने हुए हैं।''

> **''हिन्दू अर्थात भारतीय''**
> हिन्दू और भारतीय समानार्थी हैं। हिन्दुत्व और प्राचीन संस्कृति एक हैं। निस्संदेह यहाँ अनेक रीति रिवाज आस्था और विश्वास रहे हैं।

डॉ० द्विवेदी की यह स्थापना सही है। वे कहते हैं, ''परन्तु आर्यों का साहित्य कितना भी पुराना और विशाल क्यों न हो भारतवर्ष के समूचे जनसमूह के विकास के अध्ययन के लिए न तो वह पर्याप्त ही है और न अविसंवादी ही है। इस देश में बहुत सी आर्येतर जातियां अत्यंत सभ्य और संस्कृत जीवन व्यतीत करती थीं। बहुत सी ऐसी भी थीं जिनके आचार विचार में जंगलपन का प्राधान्य था। संघर्ष में पड़कर आर्यों को दोनों प्रकार की जातियों से प्रभावित होना पड़ा। उनके साहित्य शिल्प और आचार विचार में ये प्रभाव स्पष्ट है। आर्यों के पश्चात भी अनेक जातियां यहाँ आईं।'' डॉ० द्विवेदी मानते थे कि पहले यहाँ आर्य आए। उसके बाद भी यहाँ अन्य जातियां आईं। डॉ० द्विवेदी आर्यों को यहाँ का मूल निवासी नहीं मानते। लिखते हैं, **''आर्यों सहित बाहर से आईं तमाम जातियों का मिलन क्षेत्र यह भारतवर्ष है।''** डॉ० द्विवेदी की बातें उचित हैं लेकिन आर्य बाहर से नहीं आए। उन्होंने आर्यों और द्रविड़ों की सभ्यताओं का संघर्ष भी बताया और बाद में समन्वय भी। मध्यकाल में यहाँ इस्लाम आया। इसके पहले अनेक पंथ विश्वास यहाँ फल फूल रहे थे। विचार विविधता थी। लेकिन जीवन का दृष्टिकोण लगभग एक था। यह एकरूपता लगातार बढ़ी है। डॉ० द्विवेदी ने बताया है, ''इस एकरूपता के कारण ही नाना मतों के मानने वाले, नाना स्तरों पर खड़े हुए नाना मर्यादाओं में बंधे हुए अनेक जनवर्ग एक सामान्य नाम से पुकारे जाने लगे। यह नाम था हिन्दू। हिन्दू अर्थात भारतीय।''

> ''इस एकरूपता के कारण ही नाना मतों के मानने वाले, नाना स्तरों पर खड़े हुए नाना मर्यादाओं में बंधे हुए अनेक जनवर्ग एक सामान्य नाम से पुकारे जाने लगे। यह नाम था हिन्दू। हिन्दू अर्थात भारतीय।''

हिन्दू और भारतीय समानार्थी हैं। हिन्दुत्व और प्राचीन संस्कृति एक हैं। निस्संदेह यहाँ अनेक रीति रिवाज आस्था और विश्वास रहे हैं। कुछ समूह आस्तिक थे तो कुछ अल्प समूह नास्तिक भी थे। आस्था और आस्तिकता पर तर्क भी थे। संशय थे। लेकिन देश व दुनिया को आनंद मगन करने के लक्ष्य समान थे। इस्लाम के आने के बाद यहाँ का समाज दो खण्डों में प्रत्यक्ष हुआ। इस्लाम अनुयायियों का उद्देश्य प्रेम और आत्मीयता बढ़ाना नहीं था। वे भारत को इस्लाम अनुयायी बनाने के लक्ष्य पर काम कर रहे थे। इस कारण भारत में भारी संघर्ष भी चला। जोर जबरदस्ती भय व प्रलोभन के आधार पर धर्मांतरण होते रहे। हिन्दुओं का उत्पीड़न हुआ। व्यापक संहार भी हुए। इस्लाम में तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के लिए कोई स्थान न था न है। इसलिए भारत में बाहर से आए तमाम जनसमूहों की तरह इस्लाम अनुयायियों का भारतीयकरण नहीं हुआ।

कुछ विद्वानों ने यहाँ आर्य और अनार्य के बीच कपोलकल्पित संघर्षों को भी इतिहास का अंग बताया है। जबकि ऐसे समूहों के बीच कोई युद्ध नहीं हुआ। छुटपुट स्थानीय लड़ाइयों की बात दीगर है। आर्य वैदिककाल के प्रमुख जनसमूह हैं। बाहर से भारत आए जनसमूहों को भी प्राचीन आर्यों ने सम्मान दिया। मुसलमानों के आने के पहले से यहाँ एक तार्किक समाज था और आज भी है। आर्य परंपरा ने ही कर्मफल का सिद्धांत विकसित किया। कर्मफल के सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्म का परिणाम मिलता है। कभी–कभी कर्मतप का परिणाम मिलता नहीं दिखाई पड़ता। पुनर्जन्म के सिद्धांत ने ऐसे कर्मों के परिणाम को पुनर्जन्म से जोड़ा। प्रत्यक्ष जीवन के शुभ और अशुभ परिणाम पूर्व जन्म के कर्मों का परिणाम भी हो सकते हैं। पुनर्जन्म का सिद्धांत बौद्धों में भी रहा है। प्रख्यात यूनानी दार्शनिक पाइथागोरस (ईसापूर्व पांचवीं शताब्दी) ने भी पुनर्जन्म के सिद्धांत को माना। बहुत संभव है कि पाइथागोरस ने पुनर्जन्म का सिद्धांत भारत से पाया हो। प्रख्यात विद्वान विलियम जोंस, कोल ब्रुक, हॉपकिंस आदि ने कहा है कि यह सिद्धांत पाइथागोरस ने भारत से ही पाया था। कुछ विद्वानों ने इसके उलट भी मत व्यक्त किया है कि हिन्दुओं ने यह सिद्धांत पाइथागोरस से पाया था। यह सच नहीं है।

पुनर्जन्म का सिद्धांत भारत ने पाइथागोरस से नहीं सीखा। पाइथागोरस ईसापूर्व पांचवीं शताब्दी के विद्वान थे। तब यहाँ बौद्ध धर्म बहुप्रचारित था और बौद्ध पुनर्जन्म मानते थे। यहाँ उपनिषद दर्शन भी था। कठोपनिषद, ईशावास्योपनिषद जैसी अनेक उपनिषदें बौद्ध पंथ के पहले की है और उपनिषदों में पुनर्जन्म की धारणा है। यूनानी दर्शन की तमाम मान्यताएं भारतीय उपनिषद दर्शन से मिलती हैं। थेल्स (ईसापूर्व छठवीं शताब्दी) ने जल को सृष्टि का आदितत्व माना था। यह धारणा ऋग्वेद में बहुत पहले से है। ऋग्वेद में कहते हैं कि "जल माताएं ही इस संसार को जन्म देने वाली हैं।" इसी तरह यूनानी दार्शनिक अनक्सिमेनस ने वायु को सृष्टि का आदितत्व माना था। वायु को आदितत्व और प्रत्यक्ष ब्रह्म मानने की धारणा ऋग्वेद में है। उपनिषदों में भी है। हिराक्लिटस ने ताप से सृष्टि के उदभव की व्याख्या की। ऋग्वेद में यह धारणा भी पहले से है। भारतीय संस्कृति का सतत् विकास हुआ है। प्राचीन काल में इस विकास का नेतृत्व दर्शन ने किया है। अब विज्ञान वही काम कर सकता है।

डॉ. दिलीप अग्निहोत्री

नारी वंदन ! मोदी का अभिनन्दन..

दशको से लंबित अनेक कार्यों को नरेंद्र मोदी ने पूर्णता प्रदान की. महिला आरक्षण का विषय भी ऐसा था। सत्ताइस वर्षों से इसे केवल राजनीति करने का माध्यम बना कर रखा गया था।नरेंद्र मोदी के प्रयास से नारी शक्ति वंदन विधेयक लोकसभा और राज्यसभा से पारित हो गया। जबकि यह मान लिया गया था कि यह विधेयक जब भी लोकसभा में पेश होगा, तब केवल हंगामा होगा। इसके बाद इसको पारित कराने का प्रयास बंद कर दिया जाएगा। नरेंद्र मोदी ने यह धारणा बदल दी। नारी शक्ति वंदन विधेयक संसद के दोनों सदनों में प्रस्तुत हुआ और पारित भी हुआ।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राष्ट्र को सर्वोच्च मानते हुए अपने दायित्वों का निर्वाह करते हैं। वह चुनाव को ध्यान में रख कर निर्णय नहीं करते हैं। बल्कि इससे आगे बढ़ कर देश और समाज का हित देखते हैं। वह चुनावी हानि लाभ का आकलन नहीं करते हैं।

नारी शक्ति वंदन विधेयक भी समाज हित को ध्यान में रख कर लाया गया। सरकार ने पहले ही स्पष्ट कर दिया कि परिसीमन के बाद ही महिला आरक्षण कानून पर अमल होगा। यह कार्य भी सरकार नहीं बल्कि निष्पक्ष आयोग करेगा। महिलाओं को आरक्षण देने के लिए संविधान में संशोधन ही सबसे बड़ी बाधा रहा है। पिछले अनुभव भी निराशाजनक थे। ऐसे में सरकार जब पूरी तरह आश्वस्त हुई कि इस समय संविधान संशोधन हो सकता है, तभी वह लोकसभा में विधेयक लेकर आयी। लेकिन विपक्ष ने इसका चुनावी द्रष्टि से लाभ उठाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इंडी एलायंस के दलों के बीच अपने को पिछड़ा और मुसलमानों का सबसे बड़ा हितैषी दिखाने की होड़ मची थी। लोकसभा और राज्यसभा दोनों में यही दृश्य था। जबकि सत्ता में रहते हुए इन दलों की प्राथमिकता में केवल अपने वोटबैंक का ही महत्व रहता था। उनकी सरकारों पर जाति विशेष को महत्व देने के आरोप भी लगते रहे हैं। महिला आरक्षण बिल पर वही दल पूरे पिछड़े वर्ग के प्रति हमदर्दी दिखा रहे थे। यहां तक कि मुस्लिम महिलाओं के लिए भी आरक्षण की मांग उठाई गई। वह जानते थे कि संविधान इसकी अनुमति नहीं देता है। फिर भी इस बहाने तुष्टीकरण की राजनीति का प्रदर्शन किया गया। कुछ भी हो, यह मानना पड़ेगा कि सरकार ने उचित समय पर यह विधेयक लाने का निर्णय लिया। विपक्ष ने मुद्दे तो पुराने ही उठाए, लेकिन इस बार वह विधेयक को

> नारी शक्ति वंदन अधिनियम से महिला सशक्तिकरण को और बढ़ावा देगा। राजनीतिक में महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी।

पारित होने से रोकने की स्थिति में ही नहीं थे। नई संसद का निर्माण मोदी सरकार का एतिहासिक कार्य है। इसके प्रथम सत्र में भी इतिहास बना। लोकसभा में नारी शक्ति वंदन अधिनियम 454 वोट से पारित हुआ। विरोध में मात्र दो मत पड़े। राज्यसभा में सर्वसम्मति से विधेयक को पारित किया गया। वैसे पिछड़े दलितों के लिए दहाड़ने वालों को यह बताना चाहिए कि उन्हें इस वर्ग की महिलाओं को तीस प्रतिशत टिकट देने में क्या कठिनाई रही है। 2010 में मनमोहन सरकार ने राज्यसभा में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण बिल को बहुमत से पारित करा लिया था। सपा और राजद ने बिल का विरोध करते हुए तत्कालीन सरकार से समर्थन वापस लेने की धमकी दे दी थी। इसके बाद बिल को लोकसभा में पेश नहीं किया गया। संसद से संविधान का 128वां संशोधन विधेयक 2023 पारित पारित होना सरकार की ऐतिहासिक उपलब्धि है। नारी शक्ति वंदन अधिनियम से महिला सशक्तिकरण को और बढ़ावा देगा। राजनीतिक में महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी। राहुल गांधी ने अड़ंगा लगाने का प्रयास किया। कहा कि ओबीसी आरक्षण के बिना यह बिल अधूरा है। सोनिया गांधी सहित विपक्ष के अन्य नेताओं ने भी यही राग अलापा था। अमित शाह ने कहा कि चुनाव के बाद तुरंत ही जनगणना और डिलिमिटेशन होगा। महिलाओं की भागीदारी जल्द ही सदन में बढ़ेगी। विरोध करने से अनावश्यक विलंब होगा। भाजपा पिछड़ों की सबसे बड़ी हितैषी है।

सरकार में उन्तीस प्रतिशत मतलब पच्चासी

सांसद ओबीसी हैं. उन्तीस मंत्री ओबीसी हैं। सत्ताइस प्रतिशत विधायक ओबीसी हैं। संविधान संशोधन के बाद लोकसभा की 543 सीटों में से 181 महिलाओं के लिए आरक्षित होंगी। ये आरक्षण पंद्रह साल तक रहेगा। इसके बाद संसद चाहे तो इसकी अवधि बढ़ा सकती है। यह आरक्षण सीधे चुने जाने वाले जनप्रतिनिधियों के लिए लागू होगा। यह राज्यसभा और राज्यों की विधान परिषदों पर लागू नहीं होगा। भाजपा सरकार ने पिछड़ों दलितों गरीबों के लिए सर्वाधिक कार्य किया है। यूपीए को ओबीसी एससी–एसटी का ख्यांल तब नहीं आया था जब राज्यसभा मे यह बिल पारित कराया था। भाजपा सरकार ने ग्यारह करोड़ शौचालय बनाये। बावन करोड़ बैंक अकाउंट खोले गए। सत्तर प्रतिशत अकाउंट माताओं के नाम से खोले गए। नरेंद्र मोदी जब गुजरात के मुख्यमंत्री थे, तब बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ का नारा देशभर में दिया। गुजरात में उनके प्रयासों से जनजागृति के माध्यम से बिना किसी कानून के लिंग अनुपात में बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ।महिलाओं का संगठन में तैतीस प्रतिशत स्थान देने वाली भाजपा एकमात्र पार्टी है. अनुच्छेद 303, 30ए लोकसभा में मातृशक्ति को एक तिहाई आरक्षण देगा। 332ए विधानसभाओं में मातृशक्ति को एक तिहाई आरक्षण प्रदान करेगा। इसके साथ–साथ एससी एसटी वर्ग के लिए जितनी भी सीटें रिजर्व हैं, उसमें भी एक तिहाई सीटें मातृशक्ति के लिए आरक्षित होंगी।

75 वर्षों की राष्ट्र की संसदीय यात्रा

माननीय अध्यक्ष जी, देश की 75 वर्षों की संसदीय यात्रा, उसका एक बार पुनः स्मरण करने के लिए और नए सदन में जाने से पहले उन प्रेरक पलों को इतिहास की महत्वपूर्ण घड़ी को स्मरण करते हुए आगे बढ़ने का ये अवसर, हम सब इस ऐतिहासिक भवन से विदा ले रहे हैं। आजादी के पहले ये सदन Imperial Legislative Council का स्थान हुआ करता था। आजादी के बाद ये संसद भवन के रूप में इसको पहचान मिली। ये सही है इस इमारत के निर्माण करने का निर्णय विदेशी सांसदों का था, लेकिन ये बात हम न कभी भूल सकते हैं और हम गर्व से कह सकते हैं, इस भवन के निर्माण में पसीना मेरे देशवासियों का लगा था, परिश्रम मेरे देशवासियों का लगा था, और पैसे भी मेरे देश के लोगों के लगे थे।

इस 75 वर्ष की हमारी यात्रा ने अनेक लोकतांत्रिक परम्पराओं और प्रक्रियाओं का उत्तम से उत्तम सृजन किया है। इस सदन में रहते हुए सबने उसमें सक्रियता से योगदान भी दिया है और साक्षी भाव से उसको देखा भी है। हम भले ही नए भवन में जाएंगे, लेकिन पुराना भवन भी; ये भवन भी आने वाली पीढ़ियों को हमेशा–हमेशा प्रेरणा देता रहेगा। ये भारत के लोकतंत्र की स्वर्णिम यात्रा का एक महत्वपूर्ण अध्याय है जो सारी दुनिया को भारत की रगों में लोकतंत्र का सामर्थ्य कैसे है, इसका परिचित कराने का काम इस इमारत से होता रहेगा।

अमृतकाल की प्रथम प्रभा का प्रकाश, राष्ट्रं में एक नया विश्वास, नया आत्म विश्वास, नई उमंग, नए सपने, नए संकल्प और राष्ट्र का नया सामर्थ्य उसे भर रहा है। चारों तरफ आज भारतवासियों की उपलब्धि की चर्चा हो रही है और गौरव के साथ हो रही है। ये हमारे 75 साल के संसदीय इतिहास का एक सामूहिक प्रयास का परिणाम है। जिसके कारण विश्व में आज वो गूंज सुनाई दे रही है।

चंद्रयान–3 की सफलता न सिर्फ पूरा भारत, पूरा देश अभिभूत है। इसमें भारत के सामर्थ्य का एक नया रूप, जो आधुनिकता से जुड़ा है, जो विज्ञान से जुड़ा है, जो टेक्नोलॉजी से जुड़ा है, जो हमारे वैज्ञानिकों के सामर्थ्य से जुड़ा है, जो 140 करोड़ देशवासियों की संकल्प की शक्ति से जुड़ा है, वो देश और दुनिया पर एक नया प्रभाव पैदा करने वाला है। ये सदन और इस सदन के माध्यम से मैं फिर एक बार देश के वैज्ञानिकों और उनके साथियों को कोटि–कोटि बधाइयां देता हूं, उनका अभिनंदन करता हूं।

हम सबके लिए गर्व की बात है, आज भारत विश्वमित्र के रूप में अपनी जगह बना पाया है। पूरा विश्व भारत में अपना मित्र खोज रहा है, पूरा विश्व भारत की मित्रता को अनुभव कर रहा है। उसका मूल कारण है हमारे जो संस्कार हैं, वेद से विवेकानंद तक जो हमने पाया है, 'सबका साथ, सबका विकास' का मंत्र आज विश्व को हमें साथ लाने में जोड़ रहा है।

ये सदन से बिदाई लेना, बहुत ही भावुक पल है परिवार भी अगर पुराना घर छोड़कर के नए घर जाता है तो बहुत सारी यादें कुछ पल के लिए उसको झंझोड़ देती हैं और हम जब ये सदन को छोड़कर जा रहे हैं तो हमारा मन–मस्तिष्क भी उन भावनाओं से भरा हुआ है, अनेक यादों से भरा हुआ है। खट्टे–मीठे अनुभव भी रहे हैं, नोक–झोंक भी रही है, कभी संघर्ष का माहौल भी रहा है तो कभी इसी सदन में उत्सव और उमंग का माहौल भी रहा है। ये सारी स्मृतियां हमारे साथ हम सबकी साझी स्मृतियां हैं, ये हम सबकी सांझी विरासत है और इसलिए

इसका गौरव भी हम सबका सांझा है। आजाद भारत के नवनिर्माण से जुड़ी हुई अनेक घटनाएं इन 75 वर्षो में यहीं सदन में आकार लेती हुई हमने देखी हैं। आज हम जब इस सदन को छोड़कर के नए सदन की ओर प्रस्थान करने वाले है तब भारत के सामान्य मानवी की भावनाओं को जहां जो आदर मिला है, सम्मान मिला है उसकी अभिव्यक्ति का भी ये अवसर है।

मैं पहली बार जब संसद का सदस्य बना और पहली बार एक सांसद के रूप में इस भवन में मैंने प्रवेश किया तो सहज रूप से मैंने इस संसद भवन के द्वार पर अपना शीश झुकाकर के इस लोकतंत्र के मंदिर को श्रद्धाभाव से नमन करते हुए मैंने पैर रखा था। वो पल मेरे लिए भावनाओं से भरी हुई थी, मैं कल्पना नहीं कर सकता था लेकिन भारत के लोकतंत्र की ताकत है, भारत के सामान्य मानवी की लोकतंत्र के प्रति श्रद्धा का प्रतिबिंब है कि रेलवे प्लेटफार्म पर गुजारा करने वाला एक गरीब परिवार का बच्चा पार्लियामेंट पहुंच गया। मैंने कभी कल्पना तक नहीं की थी कि देश मुझे इतना सम्मान देगा, इतना आशीर्वाद देगा, इतना प्यार देगा सोचा नहीं था अध्यक्ष जी।

हम में से बहुत लोग है जो संसद भवन के अंदर जो चीजें लिखी गई हैं उसको पढ़ते भी रहते हैं कभी–कभी उसका उल्लख भी करते है। हमारे यहां संसद भवन के प्रवेश द्वार पर एक चांगदेव के उपदेश का एक वाक्य है लोकद्वारम करके पूरा वाक्य है। उसका मतलब ये होता है कि जनता के लिए दरवाजे खोलिए और देखिए कि कैसे वो अपने अधिकारों को प्राप्त करती है, हमारे ऋषि–मुनियों ये लिखा हुआ है, हमारे प्रवेश द्वार पर लिखा हुआ है। हम सब और हमारे पहले जो यहां रहे हैं वो भी इस सत्यता के साक्षी है।

समय रहते जैसे–जैसे वक्त बदलता गया ये हमारे सदन की संरचना भी निरंतर बदलती रही है और अधिक समावेशी बनती गई है। समाज के हर वर्ग का प्रतिनिधि विविधताओं से भरा हुआ इस सदन में नजर आता है, अनेक भाषाएं हैं, अनेक बोलियां हैं, अनेक खानपान हैं, सदन के अंदर सब कुछ है और समाज के सभी तबके के लोग चाहे वो सामाजिक रचना के हो, चाहे आर्थिक रचना के हो, चाहे गांव या शहर के हो एक प्रकार से पूर्णरूप से समावेशी वातावरण सदन में पूरी ताकत के साथ जनसामान्य की इच्छा, आकाक्षाओं को प्रकट करता रहा है। दलित हो, पीड़ित हो, आदिवासी हो, पिछड़े हो, महिलाएं हो हर ने हर एक का धीरे–धीरे–धीरे योगदान बढ़ता चला गया है।

प्रारंभ में महिलाओं की संख्या कम थी लेकिन धीरे–धीरे माताओं–बहनों ने भी इस सदन की गरिमा को बढ़ाया है, इस सदन के गरिमा में बहुत बड़ा बदलाव लाने में उनका योगदान रहा है।

प्रारंभ से अब तक एक मोटा–मोटा हिसाब लगाता था करीब–करीब साढ़े सात हजार से अधिक जनप्रतिनिधि दोनों सदनों में मिलाकर के योगदान दे चुके हैं इतने सालों में साढ़े सात हजार से करीब–करीब ज्यादा। इस कालखंड में करीब 600 महिला सांसदों ने भी इस सदन की गरिमा को बढ़ाया है दोनों सदनों में।

अब जानते है कि सदन में आदरणीय इंद्रजीत गुप्ता जी 43 ईयर अगर मेरी गलती नहीं हो तो 43 ईयर, इस सदन में लंबा समय बैठकर के इस सदन के साक्षी बनने का उनको सौभाग्य मिला। और यही सदन है आदरणीय अध्यक्ष जी जहां शतीगुर रहमान जी 93 की ऐज में भी सदन में अपना योगदान देते रहे जबकि उनकी उम्र 93 थी। और आदरणीय अध्यक्ष जी, ये भारत के लोकतंत्र की ताकत है कि 25 साल की उम्र की चंद्रमणी मुर्मू इस सदन की सदस्य बनी थी, सिर्फ 25 साल की उर्म की, सबसे छोटी उम्र की सदस्य बनी थी।

वाद, विवाद, कटाक्ष ये सबकुछ हम सबने अनुभव किया है हम सबने initiate भी किया है कोई बाकी नहीं है। लेकिन उसके बावजूद भी शायद जो परिवार भाव हम लोगों के बीच में रहा है, हमारे पहले की पीढ़ियों में भी रहा है, जो लोग प्रचार माध्यमों से हमारे यहां का रूप देखते है और बाहर निकलते ही हमारा जो अपनापन होता है, परिवार भाव होता है वो एक अलग ही ऊंचाई पर ले जाता है ये भी इस सदन की ताकत है। एक परिवार भाव और उसके साथ–साथ हम कभी कड़वाहट पाल के नहीं जाते, हम उसी प्यार से सदन छोड़ने के कई वर्षों के बाद भी मिल जाए तो भी उस प्यार को कभी भूलते नहीं है, उस स्नेह भरे दिनों को भूलते नहीं हैं, वो मैं अनुभव कर सकता हूं।

हमारे पहले भी और वर्तमान भी हमने कई बार देखा है कि अनेक संकटों के बावजूद भी, अनेक असुविधाओं के बावजूद भी सांसद सदन में आए है और उन्होंने शारीरिक पीड़ा भी सही हो तो भी सदन में एक सांसद के रूप में, जनप्रतिनिधि के रूप में अपना कर्तव्य निभाया है, ऐसी अनेक घटनाएं आज हमारे सामने हैं। गंभीर–गंभीर बीमारियों के बावजूद भी कोई व्हीलचेयर में आना पड़ा, किसी को डॉक्टरों को बाहर खड़ा रखकर के अंदर आना पड़ा लेकिन सभी सांसदों ने कभी न कभी इस प्रकार से अपनी भूमिका निभाई है।

आजादी के बाद बहुत बड़े–बड़े विद्वान लोगों ने बहुत आशंकाए व्यक्त की थी। पता नहीं देश का क्या होगा, चल पाएगा कि नहीं चल पाएगा, एक रहेगा बिखर जाएगा, लोकतंत्र बना रहेगा नहीं, पचासों, लेकिन इस देश की संसद की ताकत है कि पूरे विश्व को गलत सिद्ध कर दिया। और ये राष्ट्र पूरे सामर्थ्य के साथ आगे बढ़ता रहा है। और इस विश्वास से कि हम भले आशंकाए होंगी, घने काले बादल होंगे लेकिन सफलता प्राप्त करते रहेंगे और ये हम सब लोगों ने, हमारी पुरानी पीढ़ियों ने मिलकर के इस काम को करके दिखाया है, इसका गौरवगान करने का ये अवसर है।

इसी भवन में दो साल ग्यारह महीने तक संविधान सभा की बैठकें हुई। और उनमें देश के लिए एक मार्गदर्शक जो आज भी

हमें चलाता है हमारे संविधान दिया और 26 नवंबर 1949 को जो संविधान हमें मिला वो 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ। इन 75 वर्षों में सबसे बड़ा जो achievement है वो ये है कि देश के सामान्य मानवीय का इस संसद पर विश्वास बढ़ता ही गया है। और लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत यही है कि इस महान संस्था के प्रति, इस महान institution के प्रति, इस व्यवस्था के प्रति उनका विश्वास अटूट रहे, विश्वास उनका बना रहे। इन 75 वर्षों में हमारी संसद ने जन भावनाओं की अभिव्यक्ति का भवन भी बना दिया है। यहां जनभावनाओं की पुरजोर अभिव्यक्ति और हम देखते हैं राजेंद्र बाबू से लेकर डॉ. कलाम, रामनाथ जी कोविंद और अभी द्रोपदी मुर्मू जी इन सबके संबोधन का लाभ हमारे सदनों को मिला है, उनका मार्गदर्शन मिला है।

पंडित नेहरू जी, शास्त्री जी वहां से लेकर के अटल जी, मनमोहन जी तक एक बहुत बड़ी श्रृंखला जिसने इस सदन का नेतृत्व किया है और सदन के माध्यम से देश को दिशा दी है। देश को नए रूप रंग में ढालने के लिए उन्होंने परिश्रम किया है, पुरुषार्थ किया है। आज उन सबका गौरवगान करने का भी अवसर है।

सरदार वल्लभ भाई पटेल, लोहिया जी, चंद्रशेखर जी, आडवाणी जी, न जाने अनगिनत नाम जिसने हमारे इस सदन को समृद्ध करने में, चर्चाओं को समृद्ध करने में देश के सामान्य से सामान्य व्यक्ति की आवाज को ताकत देने का काम इस सदन में किया है। विश्व के भी अनेक राष्ट्राध्यक्षों ने हमारे इन सदनों को संबोधित करने का भी अवसर आए और उनकी बातों में भी भारत के लोकतंत्र के प्रति आदर का भाव व्यक्त हुआ है।

आदरणीय अध्यक्ष जी ,

उमंग उत्साह के पल के बीच में कभी सदन की आंख से आंसू भी बहे हैं। ये सदन दर्द से भर गया जब देश को तीन अपने प्रधानमंत्री उनको अपने कार्यकाल में ही खोने की नौबत आई। नेहरू जी, शास्त्री जी, इंदिरा जी, तब ये सदन आश्रम भीनी आंखों से उन्हे विदाई दे रहा था।

अनेक चुनौतियों के बावजूद भी हर स्पीकर ने, हर सभापति ने बेहतरीन तरीके से दोनों सदनों को सुचारू रूप से चलाया है और अपने कार्यकाल में उन्होंने जो निर्णय किए हैं। वो निर्णय मावलंकर जी से काल से शुरू हुए हों या सुमित्रा जी के कालखंड हो या बिरला जी के। आज भी उन निर्णयों को reference point माना जाता है। ये काम हमारे करीब 17 स्पीकर और उसमें दो हमारी महिला स्पीकर ने भी और मावलंकर जी से लेकर के सुमित्रा ताई तक और बिरला जी, हमें आज भी मिल रहा है। हरेक ने अपनी–अपनी शैली रही है। लेकिन उन्होंने सबको साथ लेकर के नियमों कानूनों के बंधन में इस सदन को हमेशा ऊर्जावान बनाए रखा है। मैं आज उन सभी स्पीकर महोदय को भी आज वंदन करता हूं, अभिनंदन करता हूं।

ये वो सदन है जहां कभी भगत सिंह, बटुकेश्वकर दत्त , उन्होंने अपनी वीरता, सामर्थ्य से अंग्रेज सल्तनत को जला दिया था बम का धमाका करके। वो बम की गूंज भी जो देश का भला चाहते हैं, उनको कभी सोने नहीं देती।

ये वो सदन है जहां पंडित जी को इसलिए भी याद किया गया, अनेक बातों के लिए याद किया गया, लेकिन हम जरूर याद करेंगे। इसी सदन में पंडित नेहरू का At the Stroke of Midnight की गूंज हम सबको प्रेरित करती रहेगी। और इसी सदन में अटल जी ने कहा था, शब्द आज भी गूंज रहे हैं इस सदन में। सरकारें आएंगी, जाएंगी, पार्टियां बनेंगी, बिगड़ेंगी, लेकिन ये देश रहना चाहिए।

पंडित नेहरू की जो प्रारंभिक मंत्रिपरिषद थी। बाबा साहेब आंबेडकर जी एक मंत्री के रूप में थे। दुनिया की इमेज practices भारत में लाने पर बहुत जोर दिया करते थे। Factory कानून में अंतरराष्ट्रीय सुविधाओं को शामिल करने पर बाबा साहेब सर्वाधिक आग्रही रहे थे और उसका परिणाम में आज देश को लाभ मिल रहा है। बाबा साहेब आम्बेडकर ने देश को नेहरू जी की सरकार में वॉटर पॉलिसी दी थी। और वो वॉटर पॉलिसी बनाने में बाबा साहेब आम्बेडकर की बहुत बड़ी भूमिका रही थी।

हम ये जानते है कि भारत में बाबा साहेब आंबेडकर एक बात हमेशा कहते थे, कि भारत में सामाजिक न्याय के लिए भारत का औद्योगीकरण होना बहुत जरूरी है। क्योंकि देश के दलित–पिछड़ों के पास जमीन ही नहीं है, वो क्या करेगा, औद्योगिकरण होना चाहिए। और बाबा साहेब की इस बात को मान करके डॉक्टर श्याम प्रसाद मुखर्जी, जो पंडित नेहरू के मंत्री थे, उन्होंने इस देश में और पहले वाणिज्य मंत्री के रूप में

और उद्योग मंत्री के रूप में उन्होंने Industry Policy इस देश में लाई थी। आज भी कितनी ही Industry Policy बनें, लेकिन उसकी आत्मा वही होती है जो पहली सरकार ने दी थी और उसमें उनका भी बहुत बड़ा योगदान रहा था।

लाल बहादुर शास्त्री जी ने 65 के युद्ध में हमारे देश के जवानों का हौसला बुलंद करना, उनके सामर्थ्य को पूरी तरह राष्ट्रहित में झोंक देने की प्रेरणा इसी सदन में से दी थी। लाल बहादुर शास्त्री को और यहीं पर उन्होंने green revolution के लिए एक मजबूत नींव लाल बहादुर शास्त्री जी ने रखी थी। बांग्लादेश की मुक्ति का आंदोलन और उसका समर्थन भी इसी सदन ने इंदिरा गांधी के नेतृत्व में किया था। इसी सदन ने इमरजेंसी में लोकतंत्र पर होता हुआ हमला भी देखा था और इसी सदन ने भारत के लोगों की ताकत का एहसास कराते हुए मजबूत लोकतंत्र की वापसी भी इसी सदन ने देखी थी। वो राष्ट्रीय संकट को भी देखा था, ये सामर्थ्य भी देखा था। ये सदन इस बात का हमेशा ऋणी रहेगा कि इसी सदन में हमारे पूर्व प्रधानमंत्री चरण सिंह जी ने ग्रामीण मंत्रालय का गठन किया था – Rural Development Ministry। इसी सदन में मतदान की उम्र 21 से 18 करने का निर्णय हुआ था और देश की युवा पीढ़ी को उसका योगदान देने के लिए प्रेरित किया गया, उत्साहित किया गया था। हमारे देश ने गठबंधनों की सरकारें देखीं। वी0पी0 सिंह जी और चंद्रशेखर जी और बाद में एक सिलसिला चला। लंबे अर्से से एक दिशा में देश जा रहा था। आर्थिक नीतियों के बोझ तले देश दबा हुआ था। लेकिन नरसिम्हा राव की सरकार थी जिन्होंने हिम्मत के साथ पुरानी आर्थिक नीतियों को छोड़ करके नई राह पकड़ने का फैसला किया था, जिसके आज देश को परिणाम मिल रहे हैं। अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार भी हमने इसी सदन में देखी। सर्व शिक्षा अभियान देश में आज वो महत्वपूर्ण बन गया है। आदिवासी कार्यालय मंत्रालय अटल जी ने बनाया, Northeast का मंत्रालय अटल जी ने बनाया। Nuclear Test भारत के सामर्थ्य का परिचायक बन गया। और इसी सदन में मनमोहन जी की सरकार कैश फॉर वोट को भी उस कांड को भी सदन ने देखा है। 'सबका साथ सबका विकास' का मंत्र, अनेक ऐतिहासिक निर्णय, दशकों से लंबित विषय, उनका स्थाई समाधान भी इसी सदन में हुआ है। Article–370 ये सदन हमेशा–हमेशा गर्व के साथ कहेगा, ये सदन के कार्यकाल में हुआ। One Nation, One Tax 'वन नेशन, वन टैक्स' – GST का निर्णय भी इसी सदन ने किया। One Rank One Pension 'वन रैंक, वन पेंशन' OROP ये भी इसी सदन ने देखा। गरीबो के लिए 10 प्रतिशत आरक्षण कोई विवाद के बिना पहली बार इस देश में सौगात डाली गई।

आदरणीय अध्यक्ष जी,

भारत के लोकतंत्र में तमाम उतार–चढ़ाव हमने देखे हैं और ये सदन लोकतंत्र की ताकत है, लोकतंत्र की ताकत की साक्षी है, जनविश्वास का एक केंद्र बिंदु रहा है। इस सदन की विशेषता देखिए और दुनिया के लोगों को आज भी अचरज होता है ये सदन है जिसमें कभी 4 सांसद वाली पार्टी सत्ता में होती थी और 100 सदस्य वाली पार्टी विपक्ष में बैठती थी। ये भी सामर्थ्य है। इस सदन के लोकतंत्र की ताकत का परिचय कराता है। और यही सदन है जिसमें एक वोट से अटल जी की सरकार गई थी और लोकतंत्र की गरिमा को बढ़ाया था, ये भी इसी सदन में हुआ था। आज अनेक छोटी–छोटी रीजनल पार्टियों का प्रतिनिधित्व हमारे देश की विविधता को, हमारे देश की aspiration का, एक प्रकार से वो आकर्षक केंद्र बिंदु बना है।

इस देश में 2 प्रधानमंत्री ऐसे रहे मोरारजी देसाई, वी.पी.सिंह एक पल लड़ते है, Congress में जीवन खपाया था लेकिन Anti-Congress government का नेतृत्व कर रहे थे, ये भी इसकी विशेषता थी।

जब उत्तराखंड की रचना हुई तो उत्सव उत्तराखंड ने भी मनाया, उत्सव उत्तर प्रदेश ने भी मनाया। जब झारखंड की रचना हुई तो उत्सव झारखंड ने भी मनाया, उत्सव बिहार ने भी मनाया। इस सदन के सभी साढ़े सात हजार जनप्रतिनिधि रह चुके है, उनके गौरवगान का पन्ना है। इन दीवारों से हमने जो प्रेरणा पाई है, जो नया विश्वास पाया है उसको लेकर जाने का है। बहुत सी बातें ऐसी थी जो सदन मे हर किसी की ताली की हकदार थी लेकिन शायद राजनीति उसमें भी आड़े आ रही है। नेहरू जी के योगदान का गौरवगान अगर इस सदन में होता है कौन सदस्य होगा जिसको ताली बजाने का मन ना करता हो। लेकिन इसके बावजूद भी देश के लोकतंत्र के लिए बहुत जरूरी है हम सबने अपनी आशाओं तले आदरणीय अध्यक्ष जी, मुझे पूरा विश्वास है कि आपके मार्गदर्शन में और इस अनुभवी माननीय सांसदों के सामर्थ्य से हम नई संसद में जब जाएंगे तो नए विश्वास के साथ जाएंगे।

मैं फिर एक बार आज पूरा दिवस आपने इन पुरानी स्मृतियों को ताजा करने के लिए दिया, एक अच्छे वातावरण में सबको याद करने का मौका दिया इसके लिए मैं आप सबका हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। और मैं सभी सदस्यों से आग्रह करूंगा कि अपने जीवन की ऐसी मुधर यादों को यहां हम जरूर व्यक्त करें ताकि देश तक पहुंचे कि सचमुच में ये हमारा सदन, ये हमारे जनप्रतिनिधियों की गतिविधि सच्चे अर्थ में देश को समर्पित है इसका भाव लोगों तक पहुंचे, इसी अपेक्षा के साथ मैं फिर एक बार इस धरती को प्रणाम करता हूं, इस सदन को प्रणाम करता हूं। भारत के मजदूरों से बनी हुई हर एक दीवार के हर एक–एक ईटे को प्रणाम करता हूं। और पिछले 75 साल में भारत के लोकतंत्र को नया सामर्थ्य, शक्ति देने वाले हर गुरु को, उस नादब्रह्म को नमन करते हुए मेरी वाणी को विराम देता हूं।

बम-बम बोल रही है काशी

वाराणसी में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम का शिलान्यास

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वाराणसी में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम का शिलान्यास किया। आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम वाराणसी के गंजारी, राजातालाब में लगभग 450 करोड़ रुपये की लागत से विकसित किया जाएगा और यह 30 एकड़ से अधिक क्षेत्र में फैला होगा।

लोगों को संबोधित करते हुए, प्रधानमंत्री ने एक बार फिर वाराणसी आने का अवसर मिलने पर प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि इस शहर की खुशी को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि वह भारत के चंद्रमा के शिव शक्ति बिंदु तक पहुंचने के ठीक एक महीने बाद काशी का दौरा कर रहे हैं, जहां पिछले महीने की 23 तारीख को चंद्रयान चंद्रमा पर उतरा था। प्रधानमंत्री ने इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए सभी को बधाई देते हुए कहा कि शिव शक्ति का एक स्थान चंद्रमा पर है, तो दूसरा शिवशक्ति का स्थान काशी में भी है। प्रधानमंत्री ने माता विंध्यवासिनी के मार्ग के चौराहे पर स्थित इस स्थल के महत्व के बारे में भी बताया है तथा इसकी मोतीकोट गांव से निकटता है और यह राजनारायण जी का गांव है।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर भी जोर दिया कि भगवान महादेव को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम के डिजाइन ने काशी के नागरिकों में गर्व की भावना पैदा की है। उन्होंन कहा कि स्टेडियम में शानदार क्रिकेट मैच देखने को मिलेंगे, जबकि युवा एथलीटों को अंतर्राष्ट्रीय मानकों वाले स्टेडियम में प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर भी मिलेगा। उन्होंने कहा कि इससे काशी के नागरिकों को बहुत लाभ होगा।

क्रिकेट के माध्यम से दुनिया भारत से जुड़ रही है और कई नए देश क्रिकेट खेल रहे हैं जिससे बड़ी संख्या में मैच हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम आने वाले वर्षों में स्टेडियमों की बढ़ती आवश्यकता को पूरा करेगा। प्रधानमंत्री ने बीसीसीआई को भी उनके योगदान के लिए धन्यवाद दिया।

प्रधानमंत्री ने रेखांकित किया कि इस तरह के व्यापक स्तर पर खेल इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास से न केवल खेलों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था पर भी इसका सकारात्मक असर होता है। उन्होंने उल्लेख किया कि इस तरह के विकास संबंधी कार्य अधिक आगन्तुकों को आकर्षित करते हैं, जिससे क्षेत्र में होटल, भोजनालयों, रिक्शा और ऑटो चालकों के साथ–साथ नाविकों जैसे क्षेत्रों को बहुत लाभ होता है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि इसका खेल संबंधी कोचिंग और प्रबंधन संस्थानों पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जिससे युवाओं के लिए खेल से जुड़े स्टार्टअप में उद्यम करने का मार्ग प्रशस्त होता है। उन्होंने फिजियोथेरेपी पाठ्यक्रमों पर भी चर्चा की और कहा कि आने वाले दिनों में वाराणसी में एक नये खेल उद्योग के विकसित होने की उम्मीद है।

प्रधानमंत्री ने वर्ल्ड यूनिवर्सिटी खेलों पर प्रकाश डाला जहां भारत ने इस वर्ष के संस्करण में अपनी भागीदारी के दौरान अधिक पदक जीतकर इतिहास रचा है, जो इन खेलों के शुरू होने के बाद अभी तक जीते गए कुल पदकों

की तुलना में अधिक है। प्रधानमंत्री ने आगामी एशियाई खेलों में भाग लेने वाले एथलीटों को भी शुभकामनाएं दीं।
श्री मोदी ने देश के हर गांव, शहर के कोने–कोने में खेल संभावनाओं की मौजूदगी को स्वीकार किया और उन्हें खोजने एवं उनके कौशल को विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। श्री मोदी ने कहा कि छोटे शहरों और गांवों से आने वाले युवा आज देश का गौरव बन गए हैं। उन्होंने उनके लिए अधिक से अधिक अवसर पैदा करने पर जोर दिया। उन्होंने खेलो इंडिया का उदाहरण दिया जहां स्थानीय प्रतिभाओं की पहचान की जाती है और सरकार उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर के एथलीट बनाने का प्रयास करती है। इस अवसर पर खेल जगत के

गांवों के एथलीटों को नए अवसर मिलेंगे। उन्होंने इस बात पर खुशी व्यक्त की कि खेलो इंडिया के तहत तैयार किए इंफ्रास्ट्रक्चर से लड़कियों को लाभ हो रहा है।
उन्होंने बताया कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत खेल को एक्स्ट्राकरिक्युलर एक्टिविटी के बजाय एक उचित विषय के रूप में मान्यता दी गई है। पहला राष्ट्रीय खेल विश्वविद्यालय मणिपुर में स्थापित किया गया। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में भी खेल के इंफ्रास्ट्रक्चर के विस्तार के लिए हजारों करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं। उन्होंने गोरखपुर में स्पोर्ट्स कॉलेज के विस्तार और मेरठ में मेजर ध्यानचंद विश्वविद्यालय की स्थापना का भी उल्लेख किया।

प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की उपस्थिति को स्वीकार करते हुए प्रधानमंत्री ने काशी के प्रति उनके स्नेह के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।
प्रधानमंत्री ने जोर देकर कहा कि नई प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने और निखारने के लिए अच्छे कोच व अच्छी कोचिंग समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने बताया कि जिन एथलीटों ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीते हैं, उन्हें कोच की भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में युवा विभिन्न खेलों से जुड़े हैं।
उन्होंने कहा कि नए इंफ्रास्ट्रक्चर से छोटे शहरों और

प्रधानमंत्री ने देश की प्रतिष्ठा के लिए इसके महत्व पर जोर देते हुए कहा कि किसी राष्ट्र के विकास के लिए खेल के इंफ्रास्ट्रक्चर का विस्तार आवश्यक है। उन्होंने उल्लेख किया कि दुनिया के कई शहर वैश्विक खेल प्रतियोगिता के आयोजन के लिए जाने जाते हैं और उन्होंने देश में ऐसे वैश्विक प्रतियोगिताओं की मेजबानी करने में सक्षम खेल इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास पर जोर दिया। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह स्टेडियम विकास के इस संकल्प का साक्षी बनेगा, जो सिर्फ ईंटों और कंक्रीट का ढांचा नहीं होगा बल्कि भारत के भविष्य का प्रतीक भी बनेगा।

प्रधानमंत्री ने शहर में चल रहे सभी विकास से जुड़े प्रयासों के लिए काशी के लोगों को श्रेय दिया। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन का समापन करते हुए कहा "आप लोगों के बिना काशी में कोई भी कार्य पूरा नहीं हो सकता। आपके सहयोग और आशीर्वाद से हम काशी के विकास के नए अध्याय लिखते रहेंगे"।

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, बीसीसीआई के अध्यक्ष श्री रोजर बिन्नी, बीसीसीआई के उपाध्यक्ष श्री राजीव शुक्ला, बीसीसीआई के सचिव श्री जय शाह, सचिन तेंदुलकर, सुनील गावस्कर, रवि शास्त्री, कपिल देव, दिलीप वेंगसरकर, मदन लाल, गुंडप्पा विश्वनाथ और गोपाल शर्मा सहित पूर्व क्रिकेट खिलाड़ी और अन्य लोगों के अलावा उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री उपस्थित थे।

वाराणसी में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम आधुनिक विश्वस्तरीय खेल इंफ्रास्ट्रक्चर को विकसित करने के प्रधानमंत्री के विजन को साकार करने की दिशा में एक कदम होगा। आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम वाराणसी के गंजारी, राजातालाब में लगभग 450 करोड़ रुपये की लागत से विकसित किया जाएगा और यह 30 एकड़ से अधिक क्षेत्र में फैला होगा। इस स्टेडियम की वास्तुकला भगवान शिव से प्रेरित है, जिसमें अर्धचंद्राकार छत के कवर, त्रिशूल के आकार की लाइट, घाट सीढ़ियों पर आधारित बैठने की व्यवस्था और अगले हिस्से पर बेलपत्र के आकार की धातु की चादरों के डिजाइन विकसित किए गए हैं। स्टेडियम की क्षमता 30,000 दर्शकों की होगी।

काशी संसद सांस्कृतिक महोत्सव 2023 के समापन

रुद्राक्ष अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सम्मेलन केंद्र में काशी संसद सांस्कृतिक महोत्सव 2023 के समापन समारोह को

संबोधित किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने उत्तर प्रदेश में करीब 1115 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित 16 अटल आवासीय विद्यालयों का लोकार्पण किया। श्री मोदी ने काशी संसद खेल प्रतियोगिता के पंजीकरण के लिए एक पोर्टल भी लॉन्च किया। उन्होंने काशी संसद सांस्कृतिक महोत्सव के विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किये। कार्यक्रम से पहले प्रधानमंत्री ने अटल आवासीय विद्यालयों के छात्रों से बातचीत भी की।

सभा को संबोधित करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि भगवान महादेव के आशीर्वाद से काशी का सम्मान लगातार बढ़ रहा है और शहर से जुड़ी नीतियां नई ऊंचाइयों पर पहुंच रही हैं। प्रधानमंत्री ने जी20 शिखर

सम्मेलन की सफलता में काशी के योगदान पर प्रकाश डाला और उल्लेख किया कि जो लोग इस शहर में आए हैं, वे काशी की सेवा, स्वाद, संस्कृति और संगीत अपने साथ ले गए हैं। उन्होंने कहा कि जी20 शिखर सम्मेलन की सफलता भगवान महादेव के आशीर्वाद के कारण है। महादेव के आशीर्वाद से, काशी विकास के अभूतपूर्व आयाम गढ़ रही है।

प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि 2014 से इस निर्वाचन क्षेत्र के सांसद के रूप में काशी के विकास के लिए उनका विज़न आखिरकार वास्तविकता बन रहा है। उन्होंने काशी सांस्कृतिक महोत्सव में व्यापक भागीदारी की सराहना की और क्षेत्र की विभिन्न प्रतिभाओं से जुड़ने का अवसर मिलने के लिए आभार व्यक्त किया। यह उल्लेख करते हुए कि यह महोत्सव का केवल पहला संस्करण था, प्रधानमंत्री ने बताया कि लगभग 40,000 कलाकारों ने भाग लिया और लाखों आगंतुक इसे देखने के लिए कार्यक्रम स्थल पर एकत्र हुए। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि काशी संसद सांस्कृतिक महोत्सव जनता के सहयोग से आने वाले समय में अपनी एक नई पहचान बनायेगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि काशी दुनिया भर के पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बन रही है।

श्री मोदी ने कहा कि काशी और संस्कृति एक ही ऊर्जा के दो नाम हैं और काशी को भारत की सांस्कृतिक राजधानी होने का गौरव प्राप्त है। यह स्वाभाविक है कि शहर के हर कोने में संगीत प्रवाहित होता है, आखिर यह स्वयं नटराज की नगरी है। महादेव को सभी कला रूपों का स्रोत मानते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि इन कलाओं को भरत मुनि जैसे प्राचीन संतों द्वारा विकसित किया गया था और एक प्रणाली का रूप दिया गया था। स्थानीय त्योहारों और उत्सवों का उदाहरण देते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि काशी में सब कुछ संगीत और कला में डूबा हुआ है।

प्रधानमंत्री ने शहर की गौरवशाली शास्त्रीय संगीत संस्कृति और लोकगीतों पर प्रकाश डाला और उल्लेख किया कि यह शहर तबला, शहनाई, सितार, सारंगी और वीणा जैसे संगीत वाद्ययंत्रों का एक मिश्रण है। उन्होंने रेखांकित किया कि वाराणसी ने सदियों से ख्याल, ठुमरी,

दादरा, चैती और कजरी की संगीत शैलियों के साथ–साथ गुरु–शिष्य परंपरा को भी संरक्षित किया है, जिसने भारत की मधुर आत्मा को पीढ़ियों तक जीवित रखा है। प्रधानमंत्री ने तेलिया घराना, पियारी घराना और रामापुरा कबीरचौरा मुहल्ला के संगीतकारों का भी उल्लेख किया और कहा कि वाराणसी ने कई महान संगीतकारों को जन्म दिया है, जिन्होंने वैश्विक मंच पर अपनी छाप छोड़ी है। प्रधानमंत्री ने वाराणसी के कई महान संगीतकारों के साथ बातचीत करने का अवसर मिलने के लिए भी आभार व्यक्त किया।

इस बात को रेखांकित करते हुए कि दुनिया भर से कई विद्वान संस्कृत सीखने के लिए काशी आते हैं, प्रधानमंत्री ने बताया कि इसी विश्वास को ध्यान में रखते हुए आज 1100 करोड़ रुपये की लागत से अटल आवासीय विद्यालयों का लोकार्पण किया गया है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इन स्कूलों का उद्घाटन श्रमिकों सहित समाज के कमजोर वर्गों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए किया गया है। प्रधानमंत्री ने कहा, "कोविड महामारी के दौरान अपनी जान गंवाने वालों के बच्चों को इन स्कूलों में निःशुल्क प्रवेश दिया जाएगा।" उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि सामान्य पाठ्यक्रमों के अलावा संगीत, कला, शिल्प, प्रौद्योगिकी और खेल की सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाएंगी। प्रधानमंत्री ने जनजातीय समाज के लिए 1 लाख एकलव्य आवासीय विद्यालयों के विकास का उल्लेख किया। उन्होंने कहा, "नई शिक्षा नीति के साथ, सरकार ने सोच को पूरी तरह से बदल दिया है। स्कूल आधुनिक हो रहे हैं और कक्षाएं स्मार्ट हो रही हैं।" श्री मोदी ने आधुनिक तकनीक की मदद से देश के हजारों स्कूलों को आधुनिक बनाने के पीएम–श्री अभियान पर प्रकाश डाला।

प्रधानमंत्री ने शहर के लिए अपने सभी प्रयासों में काशी के लोगों के पूर्ण सहयोग की सराहना की।

प्रवासी श्रमिकों के बच्चों की देखभाल के लिए सभी राज्यों को मिलने वाले बजट का जिक्र करते हुए, श्री मोदी ने कहा कि कई राज्यों ने इस धनराशि का उपयोग चुनावी अवसरवादी उद्देश्यों के लिए किया, जबकि उत्तर प्रदेश ने, मुख्यमंत्री योगी जी के नेतृत्व में, इसका उपयोग समाज के गरीब तबके के बच्चों के भविष्य के लिए किया है। प्रधानमंत्री ने आवासीय विद्यालय के छात्रों के आत्मविश्वास की सराहना की। संबोधन के अंत में उन्होंने कहा, "मेरे शब्दों को याद रखें, अगले 10 वर्षों के भीतर आप काशी के गौरव को इन स्कूलों से बाहर आते देखेंगे।"

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ, उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

काशी की सांस्कृतिक जीवंतता को मजबूत करने के प्रधानमंत्री के विज़न के आधार पर काशी संसद सांस्कृतिक महोत्सव की संकल्पना की गयी है। महोत्सव में 17 विधाओं में 37,000 से अधिक लोगों ने भाग लिया, जिन्होंने गायन, वाद्ययंत्र वादन, नुक्कड़ नाटक, नृत्य आदि में अपने कौशल का प्रदर्शन किया। मेधावी प्रतिभागियों को रुद्राक्ष अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सम्मेलन केंद्र में कार्यक्रम के दौरान अपने सांस्कृतिक कौशल का प्रदर्शन करने का मौका मिलेगा।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच को और विस्तार देने के उद्देश्य से, उत्तर प्रदेश में लगभग 1115 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित 16 अटल आवासीय विद्यालय विशेष रूप से कोविड–19 महामारी के कारण प्रभावित मजदूरों, निर्माण श्रमिकों और अनाथ बच्चों के लिए शुरू किए गए हैं। इसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना और बच्चों के समग्र विकास में मदद करना है। प्रत्येक स्कूल 10–15 एकड़ के क्षेत्र में निर्मित किया गया है, जिसमें कक्षाएँ, खेल मैदान, मनोरंजन क्षेत्र, एक मिनी सभागार, छात्रावास परिसर, मेस और कर्मचारियों के लिए आवासीय फ्लैट हैं। इन आवासीय विद्यालयों में से प्रत्येक में 1,000 छात्रों को समायोजित करने का लक्ष्य रखा गया है।

> **''नारी शक्ति को नमन''!**
>
> बाबा विश्वनाथ की नगरी में आज जहां भी गया, वहां माताओं–बहनों और बेटियों का जिस प्रकार का उत्साह दिखा, वह अभिभूत कर गया। नारी शक्ति वंदन अधिनियम ने हमारे इन परिवारजनों के भीतर जो ऊर्जा भरी है, वो अमृतकाल के संकल्पों को और दृढ़ करने वाली है।"

नारी शक्ति को नमन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नारी शक्ति को नमन करते हुए कहा है कि बाबा विश्वनाथ की नगरी काशी में वे जहाँ भी गए, माताओ, बहनों और बेटियों द्वारा दिखाए गए उत्साह से अभिभूत हो गए थे। श्री मोदी ने कहा कि नारी शक्ति वंदन अधिनियम ने उनमें जिस उर्जा का प्रवाह किया है, वह अमृत काल के संकल्पों को और अधिक मजबूत करने जा रही है।

नरेन्द्र मोदी : असाधारण वक्ता और प्रभावी संचारक

लोकेन्द्र सिंह

सार्वजनिक जीवन में संवाद कला का बहुत महत्व है। व्यक्तिगत स्तर और छोटे समूह में लोगों को आकर्षित करना एवं उन्हें अपने से सहमत करना अपेक्षाकृत आसान होता है। किंतु, जन (मास) को अपने विचारों से सहमत करना और अपने प्रति उसका विश्वास अर्जित करना कठिन बात है। जो लोग संवाद कला को साध लेते हैं, वे जनसामान्य से जुड़ जाते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संवाद कला को सिद्ध कर लिया है। वे असाधारण वक्ता और प्रभावी संचारक हैं। प्रधानमंत्री मोदी संचार के 7—सी के सिद्धांत को जीते हैं। संचार के विशेषज्ञ फ्रांसिस बेटजिन ने बताया है कि 7—सी के सिद्धांत का उपयोग कर संचारक बहुत ही सरलता और प्रभावी ढंग से जन (मास) के मस्तिष्क में अपनी बात (संदेश) को पहुंचा सकता है। बहुत बड़े जनसमुदाय से अपनत्व स्थापित कर सकता है। इस सिद्धांत के मुख्य तत्वों— स्पष्टता, संदर्भ, निरंतरता, विश्वसनीयता, विषय वस्तु, माध्यम और पूर्णता, की झलक प्रधानमंत्री मोदी के भाषण में रहती है। प्रधानमंत्री मोदी जो संदेश देना चाहते हैं, समाज तक वह संदेश स्पष्ट रूप से पहुँचता है। वह अपनी बात को संदर्भ के साथ प्रस्तुत करते हैं, इससे लोगों को उनका संदेश समझने में आसानी होती है और उसमें रुचि भी जाग्रत होती है। वह अपनी बात को निरंतरता और पूर्णता के साथ कहते हैं। किस तरह की बात करने के लिए कौन—सा माध्यम उपयुक्त है, यह भी वह भली प्रकार जानते हैं। युवाओं के साथ संवाद करना है तो वह नवीनतम तकनीक का उपयोग करते हैं। सोशल मीडिया के सभी मंच और नमो एप के माध्यम से वह तकनीक के साथ जीने वाली नयी पीढ़ी से संवाद करते हैं तो इस पीढ़ी को मोदी अपने निकट नजर आते हैं। सुदूर क्षेत्रों में संवाद करना है तो वह रेडियो को चुनते हैं। अहिंदी क्षेत्रों में क्षेत्रीय भाषा में अपने भाषण की शुरुआत कर, वहाँ उपस्थित जनता का अभिवादन कर वह उनका दिल जीत लेते हैं। यही कारण है कि उनको चाहने वाले लोग गुजराती और उत्तर भारत में ही नहीं, वरन भारत के दूसरे क्षेत्रों में भी समानुपात में हैं। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि प्रधानमंत्री मोदी किसी कुशल संचारक की तरह प्रभावी संचार के सभी तत्वों को ध्यान में रखकर जन संवाद करते हैं।

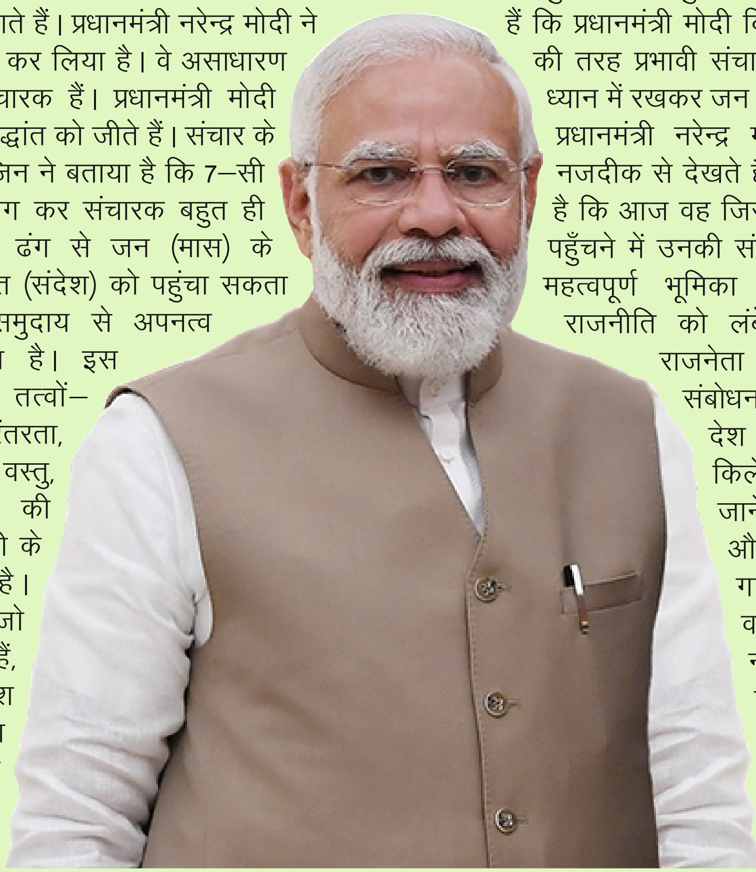

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की यात्रा को नजदीक से देखते हैं तो हमें ध्यान आता है कि आज वह जिस शिखर पर हैं, वहाँ पहुँचने में उनकी संवाद शैली की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय राजनीति को लंबे समय बाद ऐसा राजनेता मिला है, जिसके संबोधन की प्रतीक्षा समूचे देश को रहती है। लाल किले की प्राचीर से दिए जाने वाले भाषण अब औपचारिक नहीं रह गए। वह एक विशेष वर्ग तक भी सीमित नहीं रह गए हैं। अब देश का जनसामान्य उनको सुनता है। जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बोलते हैं तो देश ही नहीं अपितु दुनिया के कान उनके वक्तव्य पर टिके होते हैं। मोदी को चाहने वाले ही नहीं, अपितु उनके आलोचक भी अत्यंत ही ध्यानपूर्वक उन्हें सुनते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की संवाद शैली का असर है कि रेडियो फिर से जनमाध्यम बन गया। 'मन की बात' सुनने के लिए गाँव—शहर में चौपाल लगती हैं। वे जब विदेश में जाते हैं तो प्रवासी भारतीय उनको सुनने के लिए आतुर हो जाते हैं। विदेशों में भारतीय राजनेता को

सुनने के लिए इतनी भीड़ कभी नहीं देखी गई है। दरअसल, उन्हें यह अच्छे से ज्ञात है कि कब, कहाँ और किसके बीच अपनी बात को कैसे कहना है? यदि हम यह मान भी लें कि राजनीतिक सभाओं में भीड़ जुटाना एक प्रकार का प्रबंधन है। फिर भी अब वह दौर नहीं रहा जब आम आदमी हेलीकॉप्टर देखने के आकर्षण में सभा स्थल तक पहुँच जाता था। उस समय अपने प्रिय नेता को देखने के लिए संचार के अत्यधिक माध्यम भी नहीं थे। जबकि आज तो हर समय राजनेता की छवि हमारे सामने उपस्थित रहती है। दूसरी बात यह कि सभा स्थल की अपेक्षा घर में बैठ कर अधिक आराम और अच्छे से अपने प्रिय नेता को टेलीविजन पर सीधे प्रसारण में सुना–देखा जा सकता है। ऐसे समय में भी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को प्रत्यक्ष सुनने के लिए जनता जुटती है तो यह अपने आप में आश्चर्य और शोध–अध्ययन का विषय बनता है। यह उनकी असाधारण भाषण कला का जादू है जो लोग खिंचे चले आते हैं। वे अपनी इस कला से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करना जानते हैं।

वे जानते हैं कि आज के युवाओं को किस तरह की भाषा सुनना पसंद है। हिन्दी प्रेमी होने के बाद भी वह अपने भाषण में कुछ वाक्य/तुकबंदी अंग्रेजी के शब्दों की करते हैं। वह तुकबंदी तेजी से लोगों की जुबान पर चढ़ जाती है, जैसा कि वह चाहते थे। जैसे– रिकॉर्ड देखिए, टेप रिकॉर्ड नहीं, मिनिमम गवर्नमेंट–मैक्सिमम गवर्नेंस, रिफोर्म–परफोर्म–ट्रांसफोर्म, नेशन फर्स्ट (राष्ट्र सबसे पहले)। जीएसटी को उन्होंने कुछ इस तरह परिभाषित किया– ग्रोइंग स्ट्रॉन्गर टुगेदर। 'भीम' एप को उन्होंने डॉ. भीमराव आंबेडकर से जोड़ दिया। उनका दिया नारा 'सबका साथ–सबका विकास' और 'अच्छे दिन आएंगे' आज भी चर्चा और बहस के केंद्र में रहते हैं। अपने राजनीतिक विरोधियों पर जोरदार और असरदार हमला बोलने के लिए वह कैसे 'आकर्षक शब्द' गढ़ते हैं। उनकी संवाद कला का इतना जबरदस्त प्रभाव है कि उनके घोर विरोधी भी आजकल प्रभावी संवाद के लिए उनकी शैली का अनुसरण करते हैं।

वाकपटुता में उनका मुकाबला कोई नहीं कर सकता। अपने विरोधियों के आरोपों और अमर्यादित शब्दों को भी वह अपने हित में उपयोग कर लेते हैं। वह स्वयं स्वीकारते हैं कि विरोधियों के फेंके पत्थर (अपशब्दों) से उन्होंने अपने लिए पहाड़ बना लिया है। प्रधानमंत्री मोदी के भाषण देश की जनता के बीच विश्वास का एक वातावरण बनाते हैं। वह आह्वान करते हैं और देश की जनता उनका अनुसरण करने निकल पड़ती है। प्रधानमंत्री मोदी की वाणी का जादू है कि देश के निश्छल नागरिकों के अंतर्मन में स्वच्छता के प्रति आंदोलन का भाव प्रकट हो जाता है। छोटे बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक स्वच्छाग्रही बन जाते हैं। मोदी के कहने पर लाखों लोग गैस की सबसिडी छोड़ देते हैं। देशवासी उनके कहने पर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को किसी बड़े धार्मिक–राष्ट्रीय उत्सव की तरह मनाते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को देश की जनता क्रिकेट के महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर की तरह देखती है। भारतीय दल कठिन स्थिति में फंसा है, किंतु यदि पिच पर सचिन खड़े हैं तो देश की जनता को एक उम्मीद रहती है कि मुकाबले का परिणाम देश के पक्ष में आएगा। बहरहाल, भारतीय राजनीति में इतने अच्छे वक्ता राजनेता कम ही हैं। वर्तमान समय में तो प्रधानमंत्री मोदी के मुकाबले का कुशल संचारक अन्य कोई दिखाई नहीं देता है। पिछले सात–आठ वर्ष से नरेन्द्र मोदी लगातार बोल रहे हैं, इसके बाद भी उनको सुनने की भूख देश की जनता में बची हुई है।

> वाकपटुता में उनका मुकाबला कोई नहीं कर सकता। अपने विरोधियों के आरोपों और अमर्यादित शब्दों को भी वह अपने हित में उपयोग कर लेते हैं।

जी-20 नई दिल्ली घोषणा पत्र

'हमारे पास आपस में मिलकर बेहतर भविष्य बनाने का अहम अवसर है'

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नौ सितंबर को नई दिल्ली लीडर्स डिक्लेरेशन की घोषणा को अपनाए जाने की सराहना की तथा जी-20 के सभी सदस्यों के समर्थन और सहयोग के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त किया। जी-20 नई दिल्ली घोषणा पत्र की प्रमुख बातें निम्न हैं:

प्रस्तावना

- विश्व की सटीक दिशा तय करने के लिए जी20 के सदस्य देशों के बीच आपसी सहयोग अत्यंत आवश्यक है। वैश्विक स्तर पर आर्थिक विकास और आर्थिक स्थायित्व के मार्ग में प्रतिकूल हालात अब भी बने हुए हैं। आपस में जुड़ी तरह–तरह की चुनौतियों और संकटों के लगातार कई वर्षों तक जारी रहने के कारण 2030 एजेंडा और इसके सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) की दिशा में हासिल हुई प्रगति अब पलट गई है।
- हमारे पास आपस में मिलकर बेहतर भविष्य बनाने का अहम अवसर है। सिर्फ सही ऊर्जा को अपनाने भर से ही नौकरियों एवं लोगों की आजीविका में व्यापक वृद्धि हो सकती है और आर्थिक मजबूती सुनिश्चित की जा सकती है।
- अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग प्रमुख वैश्विक फोरम 'जी20' के राजनेताओं के रूप में हम साझेदारियों के जरिए ठोस कदम उठाने का संकल्प लेते हैं। हम इसके लिए प्रतिबद्ध हैं:
- मजबूत, सतत, संतुलित और समावेशी विकास में तेजी लाएंगे।
- हम विकास और जलवायु चुनौतियों से निपटने के लिए अपने ठोस उपायों में तत्काल तेजी लाएंगे, 'पर्यावरण के लिए जीवन शैली (लाइफ)' को बढ़ावा देंगे और जैव विविधता, जंगलों एवं महासागरों का संरक्षण करेंगे।
- टिकाऊ, गुणवत्तापूर्ण, स्वस्थ, सुरक्षित और लाभकारी रोजगारों को बढ़ावा देंगे।
- महिला–पुरुष अंतर को कम करेंगे और निर्णय लेने वालों के रूप में अर्थव्यवस्था में महिलाओं की पूर्ण, समान, प्रभावकारी और सार्थक भागीदारी को बढ़ावा देंगे।

पृथ्वी, लोगों, शांति और समृद्धि के लिए

- हम दुनिया भर में युद्धों और संघर्षों या टकराव के कारण अपार मानवीय पीड़ा और प्रतिकूल प्रभावों पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हैं।
- यूक्रेन में युद्ध के संबंध में बाली में हुई चर्चा को याद करते हुए हमने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् और संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपनाए गए अपने राष्ट्रीय रुख और प्रस्तावों को दोहराया और इस बात पर जोर दिया कि सभी देशों को संयुक्त राष्ट्र चार्टर के समस्त उद्देश्यों और सिद्धांतों के अनुरूप ही कोई भी कदम उठाना चाहिए।
- संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुरूप सभी देशों को किसी भी देश की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता या राजनीतिक स्वतंत्रता को नजरअंदाज करके उसके किसी क्षेत्र का अधिग्रहण करने के लिए धमकी देने या बल का उपयोग करने से बचना चाहिए। परमाणु हथियारों का इस्तेमाल करने या इस्तेमाल करने की धमकी देना अस्वीकार्य है।

वित्तीय समावेश को आगे बढ़ाना

- हम जी20 धनप्रेषण लक्ष्य की दिशा में हुई प्रगति पर नेताओं के 2023 अपडेट का स्वागत करते हैं और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के उन्नत डिजिटल वित्तीय समावेश के लिए नियामक टूलकिट का समर्थन करते हैं।
- हम समावेशी विकास और सतत विकास के समर्थन में वित्तीय समावेश को आगे बढ़ाने में मदद करने के क्रम में डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हैं।
- हम डिजिटल वित्तीय साक्षरता और उपभोक्ता संरक्षण को मजबूत करने के निरंतर प्रयासों का भी समर्थन करते हैं। हम जी20 2023 वित्तीय समावेश कार्य योजना (एफआईएपी) का समर्थन करते हैं, जो जी20 देशों और अन्य देशों के व्यक्तियों और एमएसएमई, विशेष रूप से कमजोर और वंचित समूहों के वित्तीय समावेश में तेजी लाने के लिए एक कार्य–उन्मुख और भविष्य–उन्मुख रोडमैप प्रदान करता है।

ऊर्जा और खाद्य असुरक्षा के व्यापक आर्थिक प्रभाव

- हालांकि, वैश्विक खाद्य और ऊर्जा की कीमतें अपने उच्चतम स्तर से कम हो गई हैं, लेकिन वैश्विक अर्थव्यवस्था में अनिश्चितताओं को देखते हुए, खाद्य और ऊर्जा बाजारों में उच्च स्तर की अस्थिरता की संभावना बनी हुई है।
- हम खाद्य असुरक्षा के खिलाफ आईएफएडी की लड़ाई का समर्थन करने के लिए आईएफएडी सदस्यों द्वारा वर्ष के अंत में कृषि विकास के लिए अंतरराष्ट्रीय कोष (आईएफएडी) संसाधनों की एक महत्वाकांक्षी पुनःपूर्ति की आशा करते हैं।

बहुपक्षवाद को पुनर्जीवित करना

- 21वीं सदी की समसामयिक वैश्विक चुनौतियों से समुचित रूप से निपटने और वैश्विक शासन व्यवस्था को अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण, प्रभावी, पारदर्शी और जवाबदेह बनाने के लिए पुनर्जीवित बहुपक्षवाद की आवश्यकता को लेकर कई मंचों से आवाज उठाई गई है। इस संदर्भ में 2030 के एजेंडे को लागू करने के प्रति लक्षित अधिक समावेशी और पुनर्जीवित बहुपक्षवाद और सुधार बेहद आवश्यक है।

मेरी माटी–मेरा देश

शिवप्रकाश

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली भारत सरकार द्वारा देश के शहीदों एवं स्वतंत्रता सेनानियों की स्मृति को अमर बनाने एवं देश के सामान्य नागरिकों में बलिदानी वीर–वीरांगनाओं के प्रति श्रद्धा एवं कृतज्ञता का भाव जागृत करने के लिए अभिनव अभियान 'मेरी माटी मेरा देश' लिया है, इसके लिए भारत सरकार का धन्यवादद्य मिट्टी के नमन वीरों का वंदन उद्घोष के साथ यह अभियान समाज में देशभक्ति का भाव एवं दुनिया में भारत को विकसित देश बनाने का संकल्प जागृत करेगा।

देश अपनी स्वतंत्रता का 75 वर्ष का पर्व मना चुका है। देश 25 वर्ष के पश्चात् अपनी आजादी के 100 वर्ष पूर्ण करेगा। यह 25 वर्ष की कालावधि अमृत काल के रूप में संबोधित की जा रही है। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश के सम्मुख अमृतकाल की पूर्णता तक महत्वाकांक्षी लक्ष्य विकसित भारत का रखा है। आर्थिक दृष्टि से हम दुनिया में सशक्त हो, भारत सुरक्षित हो इसलिए हमारा सैन्य सामर्थ्य दुनिया के अग्रणी देशों के समान हो, आपसी मतभेद भुलाकर समाज में परस्पर सद्भाव एवं भाईचारा विकसित हो, महिलाओं का सम्मान, गरीब, पिछड़े जनजाति, अनुसूचित जाति, शहरी, ग्रामीण सभी देश के उत्थान में समान रूप से सक्रिय हों, देश अपनी संस्कृति और विरासत पर गर्व करें, ऐसा भारत का निर्माण करना प्रत्येक भारतवासी का संकल्प बने। सम्पूर्ण देश इस संकल्प के साथ खड़ा हो, इसके लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पंचप्रण की शपथ लेने का आह्वाहन किया हैद्य

'मेरी माटी मेरा देश' अभियान चरणबद्ध संपन्न होगा। प्रत्येक घर के आंगन से मिट्टी का संकलन कर प्रत्येक गांव का एक कलश पूर्ण होगा। जिन घरों में मिट्टी की उपलब्धता नहीं है वे परिवार रोली–अक्षत के माध्यम से अपनी श्रद्धा प्रकट कर सकेंगे। गांव में एकत्रित होकर सामूहिक कार्यक्रम, विद्यालय में स्वतंत्रता सेनानियों का फलक लगाना, पंच प्रण की शपथ एवं 75 वृक्षों का रोपण कर अमृत वाटिका तैयार करना है। गांव से सभी कलश विकास खंड पर आएंगे। विकासखंड के उपरांत प्रदेशों की राजधानी तदोपरांत 29–30 अक्टूबर को दिल्ली में सामूहिक कार्यक्रम एवं अमृत वाटिका का निर्माण होकर कार्यक्रम की पूर्णता होगी। युवा, खेल, संस्कृति, शिक्षा एवं पर्यावरण मंत्रालय मिलकर कार्यक्रम को संपन्न करेंगे। भारतीय जनता पार्टी के असंख्य कार्यकर्ता, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी के नेतृत्व में कार्यक्रम की सफलता के लिए सहभागी होंगे। प्रधानमंत्रीजी के मार्गदर्शन में अनेक सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाएं अपनी सहभागिता के माध्यम से देश भर में देशभक्ति का वातावरण निर्माण करने में सहायक होंगी।

देश की आजादी के आंदोलन के साथ जनसामान्य को जोड़ने के लिए हमारे महापुरुषों के नेतृत्व में अनेक आंदोलन हुए। 1905 में बंग–भंग को समाप्त करने के लिए रक्षाबंधन को सामूहिक मनाना इसी प्रकार का आन्दोलन था। महात्मा गांधी जी के द्वारा आयोजित जंगल सत्याग्रह, भारत छोड़ो, चरखा एवं स्वदेशी जैसे आन्दोलनों ने समाज को आजादी के साथ जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, जिनके कारण भारत का बच्चा–बच्चा देश की आजादी प्राप्त करने के लिए प्राण–पण से तैयार हो गया। स्वतंत्रता प्राप्ति देश के नागरिकों का लक्ष्य बन गया। दुर्भाग्यवश स्वतंत्रता के बाद हमारे देश के नेतृत्व ने भावी पीढ़ी के सम्मुख भविष्य के लिए कोई लक्ष्य नहीं रखने के कारण हम दिशाहीन हुए। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का वैशिष्ट्य है कि उन्होंने देश को एक विकसित भारत का लक्ष्य दिया। लक्ष्य पूर्ति के साधन के लिए तिरंगा यात्रा एवं 'मेरी माटी मेरा देश' जैसे कार्यक्रम दिए, जिसके कारण संपूर्ण देश लक्ष्य प्राप्ति के लिए सक्रिय हो गया। जिसका परिणाम आर्थिक, शैक्षिक, विज्ञान एवं खेल सहित सभी क्षेत्रों में दिखाई दे रहा है।

कोई भी देश अपनी संस्कृति अपने महापुरुषों, अपने देश के प्रति बलिदानी अमर सेनानियों से प्रेरणा लेकर ही आगे बढ़ता है। हमारे देश की इस पवित्र मिट्टी में उन बलिदानियों के बलिदानी जीवन की सुगंध आती है। इसका कण–कण पवित्र है। इस देश को वैभव प्रदान करने वाले महापुरुष इसी में खेल कर बड़े हुए हैं। हमारे शरीर के अन्दर का रक्त एवं मांस–मांसपेशियां इसी के पवित्र अन्न से बनी है। हम को प्राण वायु इसी से प्राप्त होती है। यही हमारा पालन–पोषण करती है। इसलिए तो कवि ने सुजलां–सुफलां दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी कहकर इसकी वंदना की है। अखाड़े का पहलवान इसकी मिट्टी से अपने को पवित्र करता है। भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने इसका कण–कण शंकर बताया है। 140 करोड़ भारतवासियों को जोड़ने वाली यही हमारी भारत मां है, जिएंगे इसी के लिए एवं मरेंगे भी इसी के लिए, यही भाव देश के नागरिकों में यह अभियान जगायेगा। आइए, हम सभी इस अभियान में सहभागी होकर भारत को विकसित भारत बनाने का संकल्प लें।

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय सह महामंत्री (संगठन) हैं)

27 सितंबर (जन्म जयंती) पर विशेष

हिंदू हृदय सम्राट – अशोक सिंघल

मृत्युंजय दीक्षित

27 सितम्बर 1926 को जन्मे राष्ट्रवादी विचारधारा के वाहक, श्री राम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन के माध्यम से बहुसंख्यक हिंदू समाज को स्वाभिमान से खड़ा करने वाले विश्व हिंदू परिषद के संस्थापक अशोक सिंघल नेअपना जीवन हिंदू समाज के लिए खपा दिया। अशोक जी के व्यक्तित्व व उनके ओजस्वी विचारों का ही परिणाम है कि आज हिंदू समाज में सामाजिक समरसता का भाव दिखलायी पड़ रहा है। संत समाज व विभिन्न अखाड़ा परिषदों को एक मंच पर लाने का दुष्कर कार्य अशोक जी से ही संभव हो सका। यह उन्हीं के प्रयासों का परिणाम है कि आज देश का बहुसंख्यक समाज अपने आप को गर्व से हिंदू कहना चाहता है।

अशोक सिंघल ने देश, समाज, हिंदू संस्कृति और संस्कार के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। उन्होने श्री रामजन्मभूमि की मुक्ति तथा उस पर श्री राम मंदिर निर्माण के लिए आंदोलनों की झड़ी लगा दी। जनसभाओं व कार्यक्रमों में अशोक जी के ओजस्वी भाषणों को सुनने के लिए भारी भीड़ जमा होती थी जब यह भीड़ घरों की ओर प्रस्थान करती थी तो उसमें एक नयापन व ताजगी की उमंग होती थी ।अशोक जी में सभी को साथ लेकर चलने की अभूतपूर्व कला थी। उन्होने अपना संपूर्ण जीवन अयोध्या में भव्य राम मंदिर निर्माण और उसके प्रति संपूर्ण हिंदू समाज को जागरुक करने में खपा दिया। जिसके परिणाम स्वरूप आज अयोध्या में भव्य एवं दिव्य श्रीराम मंदिर का निमांएा तीव्र गति से पूर्णता की ओर अग्रसर हो रहा है।

1984 में अशोक जी ने श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन का श्रीगणेश किया, यह आन्दोलन विभिन्न चरणों को पार करते हुए 31 अक्टूबर और 2 नवम्बर 1990 तक पहुंचा जब मुलायम सिंह यादव ने शांतिपूर्वक राम धुन गाते हुए पैदल चलते रामभक्तों पर गोलियां चलवा दीं और सैकड़ों की संख्या में निहत्थे रामभक्तों को मौत के घाट उतर दिया। घटना से आहत सिंघल जी ने 6 दिसंबर 1992 को पुनः कारसेवा का आह्वान किया और इस बार जो हुआ वो हिन्दू संस्कृति के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों से लिख गया। कारसेवकों ने बाबरी भूमि को समतल कर अस्थायी राम मंदिर का निर्माण कर दिया । बाद में माननीय सुप्रीम कोर्ट की खंडपीठ ने भी नौ नवंबर 2019 को एक स्वर से उसी स्थान को श्रीराम जन्मभूमि स्वीकार किया। यही स्वर्गीय अशोक जी एक सपना था जिसे नौ नवंबर 2019 को माननीय सुप्रीम कोर्ट ने अपने ऐतिहासिक फैसले से पूरा कर दिया।

संघ कार्य करते हुए अशोक सिंघल ने अपने आपको देश के एक सच्चे आराधक के रूप में विकसित किया और 1942 में संघ के स्वयंसेवक बने। संघ के सर संघचालक श्री गुरूजी ने 1964 में जाने– माने संत महात्माओं के साथ मिलकर विश्व हिंदू परिषद की स्थापना की। 1966 में विश्व हिंदू परिषद में अशोक जी का पदार्पण हुआ। अदभुत योजक शक्ति,संगठन कुशलता, निर्भीकता, अडिग व्यक्तित्व और सबको साथ लेकर चलने की अशोक जी की विराटता का ही परिणाम है कि आज पूरे विश्व में सबसे प्रखर हिंदू संगठन के रूप में विश्व हिंदू परिषद का नाम लिया जा रहा है।

यह उन्हीं के प्रयासों का परिणाम है कि आज पाकिस्तान, बांग्लादेश और विश्व के अन्य देशों में यदि कोई हिंदू विरोधी या भारत विरोधी घटना घटित होती है तो वह प्रकाश में आती है। वे जहां भारत में अपनी संस्कृति व सभ्यता की रक्षा करने के लिए संघर्षरत रहते थे वे वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान और बांग्लादेश में अल्पसंख्यक हिंदुओं के प्रति किये जा रहे अत्याचारों के खिलाफ भी पूरे जोर शोर से आवाज उठाते थे। जम्मू– कश्मीर के हिंदुओं की समस्या के प्रति वे निरंतर गंभीर रहते तथा उनके दुखों को दूर करने का प्रयास भी करते थे।

अशोक सिंघल अपने आंदोलनों के दौरान गंगा नदी की अविरलता के लिए व गौहत्या के खिलाफ भी पुरजोर आवाज उठाई थी। इतना ही नहीं वे अपनी संस्थाओं के माध्यम से कन्याओं के विवाह आदि संस्कार भी संपन्न करवाते थे और 42 अनाथालायों के माध्यम से 2000 से अधिक बच्चों को आश्रय दिया जाता था जो अनवरत जारी है। गौरक्षा हेतु जनजागरण के द्वारा 10 लाख से अधिक गोवंश की सुरक्षा की गयी।

हिंदू समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए सामाजिक समरसता के कार्यक्रम भी अशोक जी की प्रेरणा से चलाये गये। दलित बस्तियों में विहिप के सेवा कार्य व पर्व आदि अभी भी उन्हीं की प्रेरणा से अनवरत जारी हैं। अशोक जी के प्रयासों से ही विहिप के काम में धर्म जागरण, सेवा, संस्कृत परावर्तन आदि अनेक नये आयाम जुड़े। यह उन्हीं का प्रयास है कि आज अमेरिका, इंग्लैंड, सूरीनाम, कनाडा, नीदरलैंड, दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, श्रीलंका आदि 80 देशों में विहिप का संपर्क है।देशभर में 53532 समितियां कार्यरत हैं। अशोक जी का हिंदू समाज के लिए अप्रतिम योगदान है जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

“आयुष्मान भव”

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन 17 सितम्बर भारतीय जनता पार्टी का सेवा पखवाड़ा प्रारम्भ हुआ है जो 2 अक्टूबर तक चलेगा। सेवा पखवाड़े के तहत 17 सितंबर से 23 सितम्बर तक **“आयुष्मान भव“** कार्यक्रम की शुरुवात की गयी। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी व प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने वर्चुअल माध्यम से जिला संयोजक और जिलाध्यक्षो का मार्गदर्शन किया। आयुष्मान भव सप्ताह के माध्यम से पार्टी पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं ने रक्तदान शिविर, आयुष्मान कार्ड बनवाने में सहयोग तथा स्वास्थ्य परीक्षण शिविरों का आयोजन किया। आयुष्मान भव कार्यक्रम प्रदेश संयोजक प्रदेश महामंत्री एवं विधान परिषद सदस्य सुभाष यदुवंश, सह संयोजक प्रदेश मंत्री शंकर गिरी, बसंत त्यागी, शकुंतला चौहान एवं प्रदेश टोली के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ ।

प्रदेश महामंत्री और अभियान संयोजक सुभाष यदुवंश ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के जन्मदिन 17 सितम्बर से प्रारम्भ हुआ सेवा पखवाड़ा 2 अक्टूबर तक चलेगा। सेवा पखवाड़े के तहत ही पार्टी ने आयुष्मान भव सप्ताह आयोजित कर प्रदेश के सभी संगठनात्मक 98 जिलो में रक्तदान शिविर, आयुष्मान कार्ड बनावाने में सहायता तथा स्वास्थ्य प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया।

सुभाष यदुवंश ने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व की सरकार की प्रत्येक योजना सेवा–सुशासन तथा गरीब कल्याण के लिए समर्पित है। आयुष्मान भव के तहत भारतीय जनता युवा मोर्चा को रक्तदान की जिम्मेदारी सौंपी गईं। रक्तदान कार्यक्रम में भाजपा पदाधिकारियों तथा पार्टी कार्यकर्ताओं ने सेवा के संकल्प के साथ 98 संगठनात्मक जिलो में 185 रक्तदान शिविर आयोजित कर 12125 यूनिट रक्तदान किया।

भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं ने सर्वे सन्तु निरामया का मंत्र लेकर 5 लाख 98 हजार 757 आयुष्मान कार्ड बनाने में लाभार्थियों का सहयोग किया। सरकार द्वारा आयुष्मान एप बनाया गया जिसके माध्यम से आयुष्मान कार्ड बनाया जा सकता है। भारतीय जनता पार्टी उत्तर प्रदेश के कार्यकर्ताओं ने पहली बार एप के माध्यम से जनता का आयुष्मान कार्ड बनने में सहयोग किया। कार्यकर्ताओं को एप द्वारा आयुष्मान कार्ड बनाने हेतु पीपीटी के माध्यम से जिला संयोजक को प्रशिक्षण दिया गया था। उत्तर प्रदेश भारतीय जनता पार्टी इस अभियान में पूरे देश में लगातार नंबर एक बनी हुई।

इसके साथ ही निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों के माध्यम से 23 सितम्बर को हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर तथा 24 सितम्बर को सीएचसी और पीएचसी पर 6 लाख से अधिक नागरिकों ने स्वास्थ्य परीक्षण करवाया। सांसद, विधायक, नगर पालिका, नगर निगम, नगर पंचायत अध्यक्ष, ब्लॉक प्रमुख, जिला पंचायत सदस्यों ने स्वास्थ शिविर का उद्घाटन किया। भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं ने स्वास्थ शिवरो पर सुबह से लेकर शाम तक आम जनमानस का सहयोग किया।

एकात्ममानववाद के प्रणेता पं. दीनदयाल उपाध्याय

भारतीय जनता पार्टी ने सोमवार को एकात्ममानववाद के प्रणेता पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयन्ती अन्त्योदय के संकल्प के साथ मनायी। प्रदेश के 27634 शक्ति केन्द्रो पर पं. दीन दयाल उपाध्याय के चित्र पर पुष्पार्चन करके उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर संगोष्ठियां आयोजित की गयी। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कानपुर देहात में पुष्पार्चन किया तथा प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने भाजपा प्रदेश मुख्यालय में युगदृष्टा पं. दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर पुष्पार्चन कर कृतज्ञ नमन किया।

प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कानपुर देहात में पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की जयन्ती पर वरिष्ठजनों का सम्मान को सम्मानित किया। श्री चौधरी ने अन्त्योदय के प्रणेता को नमन करते हुए कहा कि पं. दीन दयाल उपाध्याय ने अपने विचारों, कार्यों तथा स्थापित आदर्श मानदण्डों से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद तथा जन–जन के कल्याण का अन्त्योदय मार्ग प्रशस्त किया। भारतीय जनता पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता इस मार्ग पर चलने के लिए संकल्पित है।

लखनऊ पं0 दीनदयाल स्मृतिका पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने पुष्पार्चन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि श्रद्धेय पंडित जी का सम्पूर्ण जीवन भारत और भारतीयता के लिए समर्पित रहा। वे प्रकाशपुंज बनकर हम सबको सदैव प्रेरित करते रहेंगे।

प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने पं. दीन दयाल उपाध्याय जी के चित्र पर पुष्पार्चन करते हुए कहा कि पं. दीन दयाल उपाध्याय जी का दर्शन लोक कल्याण तथा राष्ट्र नव निर्माण के लिए विश्व का सबसे श्रेष्ठ दर्शन हैं। भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा के मूल में अन्त्योदय का दर्शन निहित है जो समग्र विकास की अवधारणा को मूर्तरूप प्रदान करता है और सर्वस्व समर्पण करके राष्ट्र और समाज के कल्याण मार्ग प्रशस्त करता है। उन्होंने कहा कि प. दीनदयाल उपाध्याय जी द्वारा प्रशस्त मार्ग सदैव हमें प्रेरित एवं मार्गदर्शित करता रहेगा।

मोदी स्टोरी

जी20 के माध्यम से दुनिया नरेन्द्र मोदी को बेहतर तरीके से जान सकेगी

— टोनी एबॉट

भारत इस वर्ष दिल्ली में जी20 की मेजबानी कर रहा है और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी इस आयोजन के लिए प्रतिनिधियों का स्वागत करेंगे, दुनिया भारत की ओर बड़ी उम्मीदों से देख रही है और वे चाहते है कि भारत स्वतंत्र विश्व का नेतृत्व करें। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में भारत दुनिया के लिए बेहतर भविष्य की आशा की किरण बनकर उभरा है।

दरअसल, ऑस्ट्रेलिया के पूर्व प्रधानमंत्री श्री टोनी एबॉट 21वीं सदी में श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाल रहे हैं।

श्री नरेन्द्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री के तौर पर एक काम करवाने वाले व्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित थे। इसलिए मैं श्री मोदी जी के साथ काम कर, अधिकतम लाभ उठाने के लिए बहुत उत्सुक था। मुझे लगता है कि हम वास्तव में उस पहली यात्रा पर काफी करीब आ गए थे, जब वह 2014 में जी20 बैठक के लिए वह ऑस्ट्रेलिया आए थे। हम चीन को लेकर काफी समान विचार रखते थे, हम व्यापार पर काफी समान विचार रखते थे। श्री एबॉट याद करते हैं कि 2014 में वह सिर्फ जी20 के लिए नहीं आए थे, वह तब एक राजकीय यात्रा पर भी थे, इस दौरान श्री मोदी जहां भी गए, उनका रॉकस्टार जैसा स्वागत हुआ।

श्री टोनी एबॉट के अनुसार यदि 19वीं सदी ब्रिटिश सदी थी और 20वीं सदी अमेरिकी सदी थी, तो यह उम्मीद करने के कई कारण है कि 21वीं सदी भारत की होगी।

उनका कहना है कि यह चीनी सदी से कहीं बेहतर होगी।

"मैं अक्सर कहता हूं कि अगर 50 या 100 साल की समय-सीमा में यदि स्वतंत्र विश्व का कोई नेता बनता है, तो उसके भारतीय प्रधानमंत्री होने की उतनी ही संभावना है, जितनी कि अमेरिकी राष्ट्रपति की।"

"जी20 कार्यक्रम शेष विश्व के लिए श्री मोदी को बेहतर तरीके से जानने का अवसर होगा। मुझे भरोसा है, वे जितनी अधिक सेवा करेंगे और वह उतने ही अधिक प्रभावशाली होते जायेंगे। मैं निश्चित रूप से उम्मीद करता हूं कि आने वाले लंबे समय तक श्री नरेन्द्र मोदी वहां रहेंगे।" साथ ही एबॉट उम्मीद करते हैं कि जहां एक ओर प्रधानमंत्री श्री मोदी अपने देश को आगे ले जाने के दृष्टिकोण के साथ कार्य कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर भारत भी दुनिया का नेतृत्व करेगा। ■

कमल पुष्प सेवा, समर्पण, त्याग, संघर्ष एवं बलिदान

पी. वी. चलपति राव

जिला: विशाखापत्तनम
जन्म: 26.06.1935
सक्रिय वर्ष: 1980-1986

पी. वी. चलपति राव के नाम से लोकप्रिय श्री पोक्कला वेंकट चलपति राव, 1948 में बाल स्वयंसेवक के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में शामिल हुए। 1950 से 1954 तक, उन्होंने विशाखापत्तनम और उसके आसपास विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में अ.भा.वि.प. की इकाइयां शुरू कीं। उन्होंने 1953 में अपने जिले में जनसंघ को मजबूत करने के लिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय के मार्गदर्शन में विभिन्न गतिविधियां आयोजित की। उनके निरंतर प्रयासों के कारण, अनाकापल्ली नगर पालिका में चार पार्षद चुने गए। 1955 में उन्होंने गोवा मुक्ति आंदोलन में भाग लिया। श्री पी. वी. चलपति राव ने उत्तरांध्र क्षेत्र में चीनी आक्रमण के खिलाफ आंदोलन चलाया और सैनिकों की मदद के लिए धन एकत्र किया। आपातकाल के दौरान वे लोक संघर्ष समिति के प्रदेश सचिव थे। वह आपातकाल के खिलाफ जागरूकता पैदा करने के लिए 19 महीने तक भूमिगत रहे और अपनी गतिविधि को अंजाम देते रहे। आंध्र प्रदेश सरकार उन्हें पकड़ने में विफल रही और अंततः उन्होंने स्वेच्छा से सरकार के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। भूमिगत आंदोलन के दौरान रेलगाड़ियों से कूदने और पुलिस से बचने के लिए भेष बदलने वाले उनके विभिन्न किस्से उत्तरांध्र क्षेत्र में खूब प्रचलित हैं। ■

लोकसभा प्रवास योजना

सोशल मीडिया प्रदेश कार्यशाला

DESTINATION UTTAR PRADESH

POWERING NEW INDIA
INVEST UP

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91, शीर्षक कोडः UPHIN16701, डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2022-23
सितम्बर द्वितीय 2023 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 26–29 (द्वितीय पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।